चंद पंचमी अति सुभ्रक, दिए बिप्र बहु दान।
तिथि तेरस रविवार दिन, पय लग्गौ चौहान॥ छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न हो कर लोहाना को ग्वालियर, रणथम्भौर, उड़छा आदि पांच हज़ार गांव देना॥

कवित्त॥ पय लग्गत चहुवान। मौज ग्वातेर सुदिन्नौ।
रिनथंभह ऊड़क्को। कहर सूरब्बर किन्नौ॥
लोहाना आजान (बाहु) * नाम थप्पै बहु अप्पै।
सहस पंच दिय ग्राम। जैत कविचंद सुजप्पै॥
तिहि घरिय मभिक्क यह अप्पियै॥ लै पट्टा सीसह धरिय।
रक्खी सुवत्त दिन तीन मंह। पग्ग मग्ग अप्पी घरिय॥
॥ छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

आजानुबाहु का आना और पृथ्वीराज का हाथी घोड़े आदि देना॥

दूहा॥ पूनम तिथि मंगल दिनह, गृह तेरिय आजान।
आसन छंडि सु अप्प दिय, बहु आदर सनमान॥
॥ छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

छंद पद्धरी॥ नव दून अप्पि मदझर गयंद। कज्जल सकोट उज्जल अनंद॥
सै पंच दिन्न बाजी पवंग। गो अप्प सैक (बान) * अहुता कुरंग॥
॥ छं० ॥ १० ॥
सै पंच दिन्न अति उंट अच्छ। कत्तार भार पक्कार कच्छ॥
दोइ सै दिन्न दासी सुचंग। झलकंत तास द्रप्पन सुअंग॥ छं० ॥ ११ ॥

७ पाठान्तर—पंचमी। दिये। तेरसि। लग्गै। चहुआन॥

८ पाठान्तर—लगात। चहुवान। दिनौ। रिनथिंभह। उंडक्का। सूरबर। किंनो। * अधिक पाठ है। थप्पे। अप्प। अंप्पे। लै। रषी मरवत दिन तीन पर॥

९ पाठान्तर—पूनिम॥

१० पाठान्तर—अनंद्द। सैं। * अधिक पाठ है। द्विन। अक्ठ। कक्ठ। से नषे। सरस। गनैं। अस। मुषि। चामंडराय। सुक्कि। सब्ब। सुंनीर। जोंहर। सुरत। रहि। डोरै॥
* पाठ उपस्थित पुस्तकों में नहीं है॥

सिरपाउ भाउ नष्षे नरस्स। वं गनै द्रव्य भंडार कस्स॥
सामंत सूर मुख नूर नथ्य। * * * ॥ छं० ॥ १२ ॥
अब्बूसराइ जामानि जद्द। चामंडराइ मन मुक्कि मद्द॥
गोयंद राइ षीची प्रसंग। उर लग्गि अग्गि नद्द नुंष्ष अंग ॥ छं० ॥ १३ ॥
ऋष्षंन सूर सामंत औरं। खरगोस नचै पै कीस दौर॥
ऐ सरस सब्ब सामंत सूर। तिन चे, नाम आजान नूर ॥ छं० ॥ १४ ॥
जुग्गिन पुरेस कजि अप्पि जीव। पती सबत्त रुष्यें सुदीव॥
सिर पटा काप लोहान होइ। लग्गे मुसरह सब पाइ लोइ ॥ छं० ॥ १५ ॥
कपूर चीर सागर सुनीर। सद्द धन्न धान जौहर सुचीर॥
पुह्लीन अरगजा बहु सुगंध। कोठार भार उग्गह सुबंध ॥ छं० ॥ १६ ॥
कामिंनु अप्पि ऐसे सुक्रित्त। परधान मान करि मानमत्त॥
रत्तौ सुस्वामि ध्रम्मह सुसब्ब। अचि चलैं स्वामि डारैं सुतब्ब॥
छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १० ॥

लोहाना के बीरत्व का वर्णन॥

गाथा॥ लोहाना आजानं। बानं पथ भीम जुद्धानं॥
आ आरूप सरूपं। बंकं भरं पद्धरं करनं॥ छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ ११ ॥

दूहा॥ लोहाना तौंवर अभंग, मुद्दर सब्ब सामंत।
सांई काज सुधारना, ढंढोलन गय दंत ॥ छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १२ ॥

लोहाना का पांच हज़ार सेना लेकर ओड़छा के राजा जसवन्त पर चढ़ाई करना॥

कवित्त॥ उंडछा अरि थान, कच्छ ईचां धर रनौ।
नाम तास जसवंत, षग्ग राजन धर रत्तौ॥
लोहाना अनबीह, बीय बारत्त समथ्थौ।
साज्ज सेन सामंत, कलह रष्पन जस कथ्थौ॥

११ पाठान्तर-पथु। बंकं।
१२ पाठान्तर-सब। ढंढोल गनय दंत।

हज्जार पंच सेना समथ, करि जुहार भर चल्लयो।
झलहलि गसंत सायरत दिन, हाक मेर गिर हल्लयो॥

छं॰ ॥ २० ॥ रू॰ ॥ १३ ॥

ओड़छा पर चढ़ाई की शोभा का वर्णन॥

छंद गीता मालती॥ सजि चल्यो तामं युद्ध धामं केन कामं पूरयं।
घन घोर घट्टा समुद फट्टा इम उलट्टा सूरयं॥ २१॥
धुंधरिग भानं षुरेसानं हेम जानं हल्लयं।
कनवज्ज थानं परि भगानं सूरतानं सल्लयं॥ २२॥
आजानुबाहं परे थाहं गज्ज गाहं घुम्मरे।
चह चहे मइं गज्ज सइं घटा भइं उप्परे॥ २३॥
नारद बक्कं सूर चक्कं लेयन्न संकं जुद्धरे।
जड़का उप्परि कंठला करि षराभष्पुरि अच्छुरे॥

छं॰ ॥ २४ ॥ रू॰ ॥ १४ ॥

ओड़छा के राजा जसवन्त का सामना करने के लिये प्रस्तुत होना॥

दूहा॥ सुनी धाह जसवंत न्रप, आयो सेन सुसज्जि।
ढलकि ढाल बद्दल मिलिय, पुब्ब झड़ाउ अवज्जि॥

छं॰ ॥ २५ ॥ रू॰ ॥ १५ ॥

लड़ाई होना और लोहाना का जीतना॥

छंद विराज॥ बजे सिंधु नद्दं। करी सुक्कि मद्दं॥
धकं सूर बज्जे। मनों मेघ गज्जे॥ २६॥
कुटे अग्ग बाजी। भमे सार भाजी॥
मचे गोम धोमं। मनों राह सोमं॥ २७॥
लिये हथ्थ बथ्थं। मनों जुद्ध पथ्थं॥
धरे धीर धारी। बकें मार मारी॥ २८॥

१३ पाठान्तर-उंडछा। थांन। कछ। इहां घंगा। सजि गसत॥
१४ पाठान्तर-षुरेलानं। सलयं घुम्मरे। क्कं। लेयन। उंडछा। कंवला॥
१५ पाठान्तर-न्रप। पुब। झझाउ॥

ग्रहे सीस ईसं। करा रंत दीसं॥
जुटंते मरइं। मचे एम कइं॥ २९॥
लरै यों लुहानं। अभंगं जुवानं॥
जसव्वंत जोरं। चषक्कोति घोरं॥ ३०॥
गमेते गमानं। गए अग्ग थानं॥ छं०॥ ३१॥ रू०॥ १६॥

दूहा॥ षेचर भूचर जलचरह, सूर गए सुर थान।
जुद्ध जुरे जसवंतसी, रन जित्यो लोहान॥ छं०॥ ३२॥ रू०॥ १७॥

लोहाना का गढ़ पर अधिकार कर लेना॥

कवित्त॥ सहस उभय लोहान, सुभट परि षेतह सज्जे।
सार धार परहार, उभय गजराज विभज्जे॥*
सय रत्तह हय षेत, नेत बह रिन जित्यौ।
षह सहस (अरि)† पवंग, कवी चंदह कहि कित्यौ॥
परि लुथ्थ कोस मुर दून प्रति, धर बिन्नी गढ़ भंजियै।
करि जेव बयट्ठो गढ़ परि, इक्क यानि मन रंजियै॥
छं०॥ ३३॥ रू०॥ १८॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके लोहाना अजानवाहु समय नाम चतुर्थ प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४॥

१६ पाठान्तर-भनैं। अग्गि। मनैं। हय। मनै। राम। मचैं। लरैं। यौं।
१७ पाठान्तर-थलचरह। सुर। जसवंतसा॥
१८ पाठान्तर-लुहान मज्जे। * यह पाद संवत १९५९ की लिखित पुस्तक में नहीं है॥
† यह अधिक पाठ है। कित्तौ। लिंबी। भंज्जियो। बयठो। रंज्जियो। लोहान॥

अथ कन्हपट्टी* समय लिख्यते ॥

(पांचवां समय)

पृथ्वराज के भोरा भीमंग से वैर होने का कारण ॥

दूहा † ॥ सुकी कहै सुक संभरी, कहौ कथा प्रति प्रान । ‡
पृथु भोरा भीमंग पहु, किम हुअ बैर विनान ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

---

१ पाठान्तर—शुक । कहैं । संम्भरी । कहो । पांन । पान । प्रथु प्रिथु । वीर ॥

* कन्ह पृथ्वीराजजी का चाचा अर्थात् काका था । वह सदा आँखों के पट्टी क्यों बांधे रहता था इसका वर्णन इसमें होने से इसका "कन्हपट्टी समय" नाम हुआ है ।

इस समय में गुजरात के दूसरे चालुक्य राजा भोला भीम का नाम और उससे पृथ्वीराज के बैर होने की कथा प्रथम ही आई है । और इसमें कहीं भी यह नहीं कहा हुआ हैं कि सोमेश्वरजी को भीम ने मार डाला था और उसका बैर लेने को पृथ्वीराजजी ने उस पर चढ़ाई करके उसे मार डाला था । जिन लोगों के हृदय में यह रासो कांटा सा सलता है उनके ही मानने के अनुसार भीम देव दूसरा सं· १२३५, ई० ११७८ में गद्दी पर बैठा था और ६३ वर्ष राज्य करके सं· १२९८, ई० १२४१ में परलोक के सिधारा । और पृथ्वीराजजी का जन्म सं· १२०६ में होकर वे ४३ वर्ष की वय में सं· १२४९ में मरे । इस से सिद्ध है सं· १२४९ तक तो दोनो राजा निर्विवाद समकालीन रहे । अब रहा उनके मारे जाने का हाल सो यहां है नहीं । जहां वह आवेगा वहां हम उसके विषय में भी ऐसी ही सत्यविवेचना करेंगे । अतएव यह समय तो क्षपक सिद्ध नहीं होता ॥

† एक पाठक की शंका है "क्या दूहा और दोहा की मात्रा में कुछ भेद है" ? उत्तर— कुछ भेद नहीं है । दूहा पुराना और दोहा नया प्रयोग है । उनमें से दूहा "दु+ऊह" से बना है अर्थात् जिसमें दो ऊह हों उसे दूहा कहते हैं । और हिन्दी दोहा शब्द संस्कृत द्विहा से इस प्रकार बना हुआ जान लेना चाहिए—द् + अ + उ = द् + अ + व् = द्व । द्व + ऊहा = द्व + अ + ऊहा = द्व + ओ + हा = द्वोहा = हिंदी दोहा । षट्भाषा के प्रचार के समय में इसको दूहड़िका वा दोहड़िका भी कहते थे । उसका संस्कृत में लक्षण और उदाहरण यह है—

मात्रा त्रयोदशकं यदि पूर्व्वं लघुकं विरामं । पश्चादेकादशकंतु दोहड़िका द्विगुणेन ॥

तथा उसका प्राकृत उदाहरण यह है :—

माई दोहडिपठण सुण हसिओ काण्ह गोआल । वृन्दावणघणकुंज चलिओ कमल रसाल ॥

अस्यार्थ :—

हे मातः ! दोहड़िकापाठं श्रुत्वा कृष्ण गोपालो हसित्वा कमपि रसालं चलितः कुत्र वृन्दावनघनकुंजे वृन्दावनस्य निविड़निकुंजे । राई इति क्वचित् पाठः तन्मतेन राधिकाया दोहड़िका पाठं श्रुत्वा । गुरुलघु व्यत्ययेन बहुधा भवति ॥

यह २४ मात्रा का छंद है । उसमें यति १३ । ११, १३ । ४१ पर हैं । और उसमें ६ ताल होते हैं—४ ४′ २ १२″, ४ ४ –, ऐसा दोहा गाने में ठीक दीपता है ॥

पृथ्वीराज के कुंअरपन का तपतेज वर्णन ॥

कवित्त ॥ कुँअरप्पन प्रथिराज । तपै तेजह सु मह्वावर ॥
सुकल बीजु दिन हुतें । कला दिन चढत कलाकर ॥
मकर आदि संक्रमन । किरन बाढैं किरनाकर ॥
यौं सोमेस कुँआर । जोति छिन छिन अति आगर ॥
हय हथ्थि देत संकै न मन । षल षंडन गढ गिरन वर ॥
चिंहु ओर जोर दसहूं दिसा । कीरति विस्तरि मह्यिय पर ॥ छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

गुजराज के राजा भोरा भीम का तपतेज वर्णन ॥

कवित्त ॥ भोरा भीम भुअंग । तपै गुज्जर धर आगर ॥
है गै दल पायक्क* । षग्गबल तेजह सागर ॥
काका सारँगदेव । देव जिम तास बड़ाइय ।
तासु पुच परताप । सिंघ सम सत्त सु भाइय ॥
परतापसीह अरसीह बर । गोकुलदास गोविंद रज ।
हरसिंह स्याम भगवान भर । कुल अरेह मुष नीर सज ॥ छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

उसके काका और चचेरे भाइयों की वीरता का वर्णन ॥

दूहा ॥ जोरावर जुरि जंगमति, भरे बथ्थ नभ गाज ।
हुकम स्वामि कुहत सु इम, मनौं तितर पर बाज ॥ छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥
तिन पर तुट्ट बीज जौं, जिन पर राज अरुट्ठ ।
राजकाज संमुह भिरन, दई न कबहू पुट्ठ ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

---

‡ यहां शुक और शुकी से कविका अभिप्राय चंद और उसकी स्त्री से है। क्योंकि यह सब महाकाव्य उनके ही संवाद में रचा गया है और आगे भी कई एक समयों में यही प्रयोग आवेगा। चंद प्राय: कवि को कीर की उपमा देता है–"आस असन कवि कीर" ॥

२ पाठान्तर–कुअरपन । कुंअरप्पन । पृथीराज । * ज्यों ज्यों अधिक पाठ है । जिम । बढै । कुवार । कुंआर । छिन ही छिन । हथि । गिनर । चिंहु । चिहुं । दिशा विसतरि ॥

३ पाठान्तर–गुजर । हय । गय । पाइक । * प्रचंड अधिक पाठ । पायक । सु । सारंगदेव । बड़ाई । तास । भाई । सिंह । सिंघ । श्याम । भगवान । सजि ॥

४ पाठान्तर–जग । बथ । गाजि । स्वांमि । कुटत । मनों । तीतर ॥

५ पाठान्तर–ज्यों । असट्टं । पिट्ट ॥

गाथा ॥ मारे रान सुरानं । झालासबलं अंगं झालालं ॥
जिन भंजे जैमालं । कव्यौ भातराजसि पंचं ॥ छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

पाट बैठने पर प्रतापसी का गर्व होना ॥

दूहा ॥ सारँग दे सुरलोक्क गत, भी प्रतापसी पाट ।
सात भ्रात सेवा करैं, तपै तेज थिर थाट ॥ छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥
अट्ठसहस दलबल अनँत, बहुत ग्रब्ब वर अप्प ।
सत्तरि सहस धर गुज्जरनि, मधि ओपत जिमकप्प ॥ छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥
स्वामि भ्रम्म रत्ते सुमन, जे ठेलैं गजठट्ट ।
ढरै परब्वत सिषर डर, करैं सत्रु दट्टवट्ट ॥ छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भीमंग के पास होना ॥

दूहा ॥ भोरा भीम भुआल के, कोई एक मैवास ।
तिन उज्जारत देस कौं, परि पुकार न्रप पास ॥ छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥
गाथा ॥ प्रात समय पूकारं, आई नरिंदं भीम दरबारं ।
करि नीसान सुधावं, चढि राजं साजि आतुरयं ॥ छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥
दूहा ॥ चालुक्कह गुज्जर धरा, ईस नेति किय भीम ।
मो डभ्भैं तिहु पूर सुवर, को चंपै अरि सीम ॥ छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

भोरा भीम की लड़ाई ॥

छं० पद्ध० ॥ चढि चल्लन राज आवाज कीन । नीसान नह बज्जे बजीन ॥
चिहु ओर भरनि कुद्दे तुरंग । सजि सिलह भाँति नाना अभंग ॥छं॥१३॥

६ पाठान्तर-रांन । भंजे ॥

७ पाठान्तर-सारंगदे । भय । करै ॥

८ पाठान्तर-ग्रब । अप । सत्तरि । गुँजरनि । उपति ॥

९ पाठान्तर-स्वामि । रते । ध्रंम्म । ठट । ठरन । परबत । शिषर । करता । शत्रु । बट ॥

१० पाठान्तर-भुवाल । सं १६४० की में "कोई एक" के स्थान में "धर जादव" पाठ है । उजारत । देशकों ॥

११ पाठान्तर-पुकारं । आई । निमानं । निसांन । घांव । साजि ॥

१२ पाठान्तर-किये ॥ यह रूपक सं० १६४० की पुस्तक नहीं है किन्तु उसके इधर की लिखित पुस्तकों में है ॥

१३ पाठान्तर-नीसांन । बजे । चिहुं । चिंहु । उर । कुट्टेति तुंग । तितुंग । भांति ॥ १३ ॥

षम षमकि धरनि थाने सुभंग। गज्जिय अकास कै गघ्घर गंग॥
भय हूह हाक आतंक जोर। सह सुरन फेरि भेरीन घोर॥ छं०॥ १४॥
उडि रेन सेन मुंदिग अकास। परि सोर सोर जहां तहां मेवास॥
धरि रोस मुच्छ मुररंत भीम। रस बीर बक्र संकाेच ग्रीम॥ छं०॥ १५॥
चंपी सु सीम अरियन सुजाम। डेरा सुदीन न्टप सरित ताम॥
जुररा सिकार तीतर बटेर। षेलंत सरित तट भइ अबेर॥ छं०॥ १६॥
इहि समय ताम परतापसीह। लहु बंधु साथ अरसी अबीह॥
ए हुते सकल बाहुर ते बेर। नय मभ्भ आइ पेलत अबेर॥ छं०॥ १७॥
गाजराज नाम साहन सिंगार। सरितान मभ्भ वह पियै वार॥
सुनि सोर दान कुट्टे कँकार। जनु भूत भांति भय भीत भार॥ छं०॥ १८॥
जमुना कि जंगि काली करार। सिर धूनि महावत दियै डार॥
गज एक वारि पीवंत दूरि। तिन पर सु तुट्टि जनुं सिंघ चूरि॥ छं०॥ १९॥
धरि पंष पप्प जनु ध्रप्पि धाय। भुज पर्‍यौ नभ्भ बद्दर सुमाय॥
दिषि दुरद उनहि आवंत आन। धुनि करि सु डारि उन पीलवान॥ छं०॥ २०॥
धायौ ति समुह साहन सिँगार। जनु बंध जंम उप्पर अपार॥
कलपंत पाइ जनु पवन आइ। हल हलै पब्ब जित नित बिठाइ॥ छं०॥ २१॥
जम रूप दूअ जनु जंम द्वार। हय भ्रात बीच घेरे असार॥
इक ओर वारि द्रह गहर गूल। इक ओर जोर बर उंच कूल॥ छं०॥ २२॥
परताप सनंमुष पर्‍यौ जाइ। डारंत अश्व असि कियौ घाइ॥
बहि सीस परन दो हथ करार। षरबूज जांनि बिफर्‍यौ विफार॥ छं०॥ २३॥
जगनाथ हंडि जनु बंटि दोइ। इह भंति कुंभ कुंभी न छोइ॥
गज पर्‍यौ धरनि साहन सिँगार। किन्नाै अकाम परताप पार॥ छं०॥ २४॥

थांने। गजिय। गग॥ १४॥ रैंन। सेंन। भिवास। मुंछ। कर्क॥ १५॥ सुजाम। तांम॥ १६॥ * इस छंद की चारो तुकें सं॰ १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं। तांम। परतापसिंह। बाहुरत। मभ्र। अबेरि॥ १७॥ नांम। सिरतांन। ह्विं। पीवंत। वारि। दांन। छुटे। छंकार। भै॥ १८॥ जगि। डारि। चूर॥ १९॥ पबय। जनुं। धपि। नभ। बदर। किमाय। आंनि। पीलवांन॥ २०॥ साहंन। श्रंगार। पाय। पबय। बठाइ॥ २१॥ जंमरूप। जंम्म। श्रोर। जोंर॥ २२॥ जाय। घाय। बिकस्यै॥ २३॥ बंटिय कि दाेय। कुभिय। छोय। श्रंगार। सिंगार। कीनैा॥ २४॥ अरसिंह। पुठि। देषि। सनमुष। गृहो। शिर। पघ। चीरि। हृष।

अरसीह पुट्ठ जग घल्यौ देष। सनमुष्ष भ्रम्यौ सम सीह भेष॥
गज गही दौरि सिर पग्ग सुंड। दिय गुरज चीर हय हथ्थि मुंड॥ छं०॥ २५॥
फव्यौति सीस भइ पंच फारि। गज ढ्यौ जानि गिरवर विसार॥
सुनि बत्त राज भोरा:सु भीम। पायौ अनंत दुष आप हीम॥ छं०॥ २६॥
कह वाव कियौ न्रप अप्प साम। तुम सो न हमहि चाकरह काम॥छं०॥२७॥रू०॥१३॥

उन सातों भाइयों का चलचित्त होना॥

दूहा॥ भा उभुय अहंकार करि, हन्यो सुबर गजराज।
दोषं हमहि लग्यौ नहीं, आप हि कीन अकाज॥ छं०॥ २८॥ रू०॥ १४॥

पृथ्वीराज का उन चलचित्त सातों भाइयों को जागीर और सिरोपाव देना॥

दूहा॥ सात भ्रात निज बात सुनि, जए अप्प चलचित्त।
प्रथीराज सुनि कुँवर नें, आप बुलाये हित्त॥ छं०॥ २९॥
दिये हथ्थ लिषि गाम पट, रहे वास थिर आनि।
चालुक चातुर वीर बर, जिन उपत मुष पानि॥ छं०॥ ३०॥
बाजी सत दीने बगसि, संबोधे सत भ्रात।
एक एक सिर पाव दिय, बहु आदर किय बात॥ छं०॥ ३१॥
गुरु लज्जा गुरु भक्ति गुरु, पन गुरु साष नरेस।
गुरु उर सत गुरु सूरतन, गुरु गति मति गुरु भेस॥ छं०॥ ३२॥ रू०॥ १५॥

पृथ्वीराज का दर्बार करके बैठना--उसमें प्रतापसी का आना और उसे मूछ मरोड़ने पर कन्ह का मारना॥

सोरठी दूहा॥ सक इक सोम कुमार, सम सामंतन सूर सम।
सोभ सीस भूअ भार,सो बैठे सुभ सभा रचि॥ छं०॥ ३३॥ रू०॥ १६॥

२५॥ सुभीम। भय। फार। गै। जांनि। बिसाल। बत। हीम॥ २६॥ कहवाय। कीयौ। श्रय। शाम। साम। सो। सों। न कांम॥ २७॥

१४ पाठान्तर-भ्रात। अहंकारि॥ यह सं· १६४७ की पुस्तक में नहीं है। और भा शब्द भ्रात का वाचक है॥

१५ पाठान्तर-निजि। भये। अय। अचल। चित्त। कुंअर। बुलाए। हित॥ २९॥ हथ। गांम। ओपत॥ ३०॥ बाज। सपत्त। दिने। शिरपाव॥ ३१॥ गुर। नरेश। गुर॥ ३२॥

१६ पाठान्तर-सोरठा। समै। समैं। एक। कुआर। सामंतह। शीश। भू। बैठें॥

छंद मोतीदाम ॥ रची सुभ सोम सभा प्रथिराज । विराजित मेरु जिसे भर साज ॥
भुजा सम कन्ह रजे चहुवान । तिनैं मुक्क राजत है मुह पान ॥छं०॥ ३४॥
जिनैं चष चाहि कँपै भर मांन । कँपै जनु मोरन अप्प षिवांम ॥
रहै चष वारि सुरातन एम । जवा अन प्रात कियो सक जेम ॥ छं० ॥ ३५॥
तहां वर चांवँड राइ रजंत । जुधं मधि चावँड रूप सजंत ॥
न्रसिंघ विराजत सिंघ जिसोह । विभीषन भा कयमास जिसोह ॥छं०॥३६॥
सबैं भर ओर उनथ्थ सुभंत । तिनं मधि पीथ कुँआर रजंत ॥
मनों सुकलं पष बीज कौ चंद । तिया रस राजत तारन इंद ॥ छं० ॥ ३७॥
प्रतापसि सातउ भ्रात सरीस । प्रथी पति आइ नमाइय सीस ॥
ति सोहत मानुस तं सत मेर । किधौं सत सिंधु सुहंत उजेर ॥छं०॥३८॥
सनंमुष कन्ह प्रतापसि आइ । ठई तिन बैठक साल सुभाई ॥
कहै भर भारथ बत्त स बांन । चच्चौ परताप्सि मुच्छन पांन ॥छं०॥३९॥
लषी चहुआन सु कन्ह अपंन । कढी असि नब्ब असंष भषंन ॥
दई असि दौरि जनेउ उतारि । इही वर अध उपंम बिचारि ॥छं०॥४०॥
मनों सब नागर साबु कटंत । इही जनु गंठि बिचें बिष तत ॥
पच्चौ परताप प्रथी पर आप । भई भर मध्य सुजोर अमाप ॥
॥ छं० ॥ ४१ ॥ रू० ॥ १७ ॥

भाई के मारे जाने पर अरिसिंह का क्रोध करना और कन्ह चौहान पर वार करना ॥

दूहा ॥ भई हूह मभ्भह मह्ल, पच्चौ भुंमि परताप ।
हाक बीर बज्जे बिषम, अरसी कुप्पौ आप ॥ छं० ॥ ४२ ॥ रू० ॥ १८ ॥

---

१७ पाठान्तर–पृथीराज । मेर । कन्हं । रचे । चहुवांन । तिनं । मुक्क पांन ॥ ३४ ॥ जिनं । कंपै । चंपै । अप्पन मोर । रहे । कि उसकनेम ॥ ३५ ॥ चांमंड । चांवंठ । राय । चांमुंड । नरसिंघ । विराजित । जिसो । मिसु । भीषन । जिसो ॥ ३६ ॥ सबें । और । ऊतथ । पिथ । कुमार । कुंआर । मंनों ॥ ३७ ॥ पृथीपति ।

नमाईय । शीका । सोहति । मानौं । मांनुस । किधों ॥ ३८ ॥ प्रतापसी । आय । कहैं ॥ बत । मुक्कन । मुंक्कन ॥ ३९ ॥ चहुवांन । अपान । तारि । वही ॥४०॥ मनैं । नीगर । बिचै । पृथी॥४१॥

१८ पाठान्तर–दोहा । भर । भुमि । यह रूपक सं० १६४५ की पुस्तक में नहीं है ॥

कवित्त ॥ भई हूह परताप । पच्यौ दिष्यौ अरसी वर ।
उच्यौ कढ्ढि तरवारि । दई भुज कन्ह वाम कर ॥
इक्क लोह वर ओर । गरै पष्पर गहि डारी ।
एक अगनिता मद्धि । आनि कूंपी घृत धारी ॥
चहुआन कन्ह अग्गै सुदर । ता पच्छै लोहन दग्यौ ।
आजुलित सत्त बर बीर मति । बीर वोर रस सौं भग्यौ ॥
छं० ॥ ४३ ॥ रू० ॥ १९ ॥

पृथ्वीराज का महल में जाना और अरिसिंहादि की लड़ाई का होना ॥

दूहा ॥ उट्ठि कुंवर प्रथिराज लषि, गयौ महल निज मद्धि ।
दै किवार मिलि थाट जुध, मच्यौ कलह सम मद्धि ॥ छं० ॥ ४४ ॥ रू० ॥ २० ॥

गाहा ॥ कढ्ढी असि अरसिंघं । नरसंघस्स भारयं सीसं ।
दई गुरज गुर अड्डुं । बड गुज्जरं रंभ कंदाई ॥ छं० ॥ ४५ ॥ रू० ॥ २१ ॥

चालि ॥ दिषि चावंडं ॥ थिजि चावंडं ॥ लोह चावंडं ॥ मन चावंडं ॥ चावंडं ॥
छं० ॥ ४६ ॥ रू० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ बढिय जंग उत्तंग । दंग जनु दाह जुलग्गिय ॥
परिय रौर राव रन । जुरिय जुध कन्ह अभिग्गिय ॥
मारि ढारि अरिसीह । चक्यौ गोयंद मेह गनि ॥
कढ्ढि हथ्थ जम दढ्ढ । दई चहुआंन कूष घन ॥
करि रोस कन्ह कर चंपि सिर । दो हथ्थन भेजी उड्डिय ॥
निकसीय प्रान गोविंद उर । जोति भेदि जोतिह मिलिय ॥
छं० ॥ ४७ ॥ रू० ॥ २३ ॥

---

१९ पाठान्तर-वांम । इक्क । भोर । डारीय । आनि • चहुआंन । अगें । पछे । मत्त । सों ॥
२० पाठान्तर-उठि । लिषि । मधि । सम । मधि ॥
२१ पाठान्तर-गाथा । वरसिंघं । शीसं । बडगुज्जरं । कंदाई ॥
२२ पाठान्तर-वचनीका । छंद । चामुंडं । थिजिं चामुंडं । चामुंडं ॥
२३ पाठान्तर-उतंग । यु । लगिय । परीय । रौरि । अभिगिय । अचागीय । हथ । दढ । कुषि । घति । हथन । निरम्मि ॥

हरसिंह का युद्ध ॥

कवित्त ॥ हकि कहर हरसिंघ। बथ्थ नरसिंघ बिलग्गिय ॥
हथ्थ बथ्थ लोहान। उपर तर तर परि दग्गिय ॥
नंषि अड नरसिंघ। भयौ हरसिंघ उद्ध वर ॥
दौरि राव चामंड। दई तरवारि पिठ्ठ पर ॥
कर फैरि मुक्कि उर अद्धधर। भयौ बिबंधव बंटि घर ॥
हरिसिंह बस्यौ हरिसिंघ पुर। रवि मंडल बल भेदि करि ॥
छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ भेद्यौ रवि मंडल सु पहु। करि प्राक्रम्म प्रमान ॥
धनि चालुक पित मात धनि। निकसि न षोयौ मान ॥
छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ २५ ॥

नरसिंह का युद्ध ।

कवित्त ॥ करि उप्परि तें दूरि। तरह नरसिंघ सु उठ्ठिय ॥
तबै भरकि भगवान। आइ सिर सार सु बुट्टिय ॥
जब नरसिंघ नरंन। करन कठ्ठी कहारिय ॥
घल्लि हथ्थ गल बथ्थ। तेन उदरं विच फारिय ॥
पर भूमि सूर भगवान भिरि। चल्यौ प्रांन जरद्द अय ॥
है है सु सबद सब लोक भय। जै जै सुर सुर लोकजय ॥
छं० ॥ ५० ॥ रू० ॥ २६ ॥

कैमास का युद्ध ॥

मोकल गढि गोकल सुजान। मद मोकल कुट्टिय ॥
तुट्टिय बीज अकास। सीस कैमान अछुट्टिय ॥

२४ पाठान्तर-बथ। लय। बथ। लोहांन। उप्पर। धर लग्गिय। चामुड। फैरि। मुक्कि। अध। बिंवंधव ॥

२५ पाठान्तर-प्रमांन। मांन ॥

२६ पाठान्तर-उठिय। तब। भगवंन। कटारिय। हथ। बथ। विचि। फारी। भगवांन। सुपद्द। सृत ॥

तुरस पट्टि कटि गुरज। मकुट करि रेष रिषेसर ॥
असि कक्कुन बर रोस। उद्दर बर बंधिय सु ओभर ॥
बिन पत्त मत्त जनु डंड डक। रंभ थंभ कर कटीयग्धज ॥
तिहि काज साज साकल सुरर। सु गुहर पठाइय गुहरध्धज ॥

छं० ॥ ५१ ॥ रू० ॥ २७ ॥

माधव खवास का युद्ध ॥

कवित्त ॥ काम धाम रिम राष। स्याम जिम धाम पिथ्थपति ॥
पत्त लत्त दिय रोस। पट्टि किप्पाट थाट भजि ॥
षग्गिय मध्य माधव षवास। आय पत्तौ तहां आरौ ॥
लगिग बथ्थ बिन नथ्थ। संड मल मच्चि अषारौ ॥
जम दड्ढ कढ्ढि चालुक्क चंपि। दिठ्ठ पांनि पावार उर ॥
मंडल दिनेस में भेद करि। सुपाट परट्ठिय ब्रह्म पुर ॥

छं० ॥ ५२ ॥ रू० ॥ २८ ॥

कन्ह का युद्ध ॥

कवित्त ॥ परि भूमि पावार। उररि भंजन किवार दुत्र ॥
तब लगि कन्ह तमंकि। आइ पहुंच्यौ अंतकलुत्र ॥
मुंक्कि रोस असि तमसि। घाइ सिर जाइ रह्यौ उत ॥
मनहुं सक्ति बन दैन। अंग जनु चन्या अजा सुत ॥
तिन हनत सिंभु धुन हनिय सिर। राज ग्रेह मधि समर हुअ ॥
हल हलकि मच्चि कोलाहलह। हाय हाय दरबार हुअ ॥

छं० ॥ ५३ ॥ रू० ॥ २९ ॥

---

२७ पाठान्तर—सुत्रांनि। बीज। बाक्कास। शीस। रिषीसर। श्रोभर। उभर। कटीय। स्वज। तिहिं। तक्के सुरर ॥

२८ पाठान्तर—कांम। धांम। स्यांम। धांम। पिथपति। पत। लत। पटि। क्रिपाट। मधि। लगि। बथ। नथ। मचि। जमदढ। चालुक। चंपि। दिठ। में। परठिय ॥

२९ पाठान्तर—तमकि। हुअ। मुकि। सिर। मनहुं। शक्ति। देन। हलहलिकि। मचि। हाहहार ॥

चालुकों के मारे जाने से दरबार में कोलाहल होना॥

दूहा॥ कोलाहल दरबार भै। सुनि चालुक हत सथ्थ॥
धस्सिय पैरि गज मत्त सम। पुच्छत पुच्छत कथ्थ॥ छं० ॥५४॥ रू०॥ ३०॥
किंछु रुधिर डठ्ठत गिरिय। परिय सच परिधारि॥
दिषि चालुक भ्रत तेह टग। कुलह बाजि जनु डारि॥ छं०॥५५॥ रू०॥ ३१॥

कवित्त॥ संकर सिंघ कि कुहि। कुहि इन्द्र कि गरुअ गज॥
कि महिष कुहि मय मत्त। भरिय दीयै कि दुष्ट कजि॥
भै कि हास रस रोस। मद्धि रावत्त विरच्चिय॥
कोलाहल बल कूक। मज्झ रावर हल मच्चिय॥
चालुक्क षवास ताकथ्थ कथि। कोलाहल हुन जानि घर॥
छंडिय सयल बोच्चिय न्रपति। हनिग कन्ह सारंगहर॥
छं०॥ ५६॥ रू०॥ ३२॥

दूहा॥ भर प्रताप दरबार के। द्वार परे मय मत्त॥
सुनत बत्त इह कहि परे। मनु निस तुट्टि नक्खत्त॥ छं०॥५७॥ रू० ३३॥

कवित्त॥ निसि षह तुट्टि नक्खिच। रोष महिषा कुटि वातन॥
परि कि दीप पातंग। सिंघ जनु कुहि कुधा तन॥
यों तुहें भर भरन। भारि भैभीर सुभग्गिय॥
मनहुँ परा पति चुनत। परिय सिंचान अचिंतिय॥
परि रैार पैारि दीनौ दरकि। धरकि कूह कल पैारि बिचिं॥
पेखत सब संत कलहंत जनु। पारथ सम भारथ्थ मचि॥
छं०॥ ५८॥ रू०॥ ३४॥

दूहा॥ माया मोह विरत्त मन। तन तिनुका सम डारि॥

---

३० पाठान्तर–मय। मत। पुछत। कथ॥

३१ पाठान्तर–बाज। यह रूपक सं. १६४० की पुस्तक में नहीं है॥

३२ पाठान्तर–भरीय। डीवि। मधि। रावत। विराचिय। मझ्झ। मचिय। कथ। जांन॥

३३ पाठान्तर–मत। बत। मनैां। नछित्र॥

३४ पाठान्तर–नछित्र। परिय। संघ। मनैां। ननहुं। अचिंतीय। दीनीय। कुच। पेखंत। स। भारथ॥

३५ पाठान्तर–विरत। पिय॥ यह रूपक सं. १६४० की पुस्तक में नहीं है॥

जुटे दिव्य दरबार मचि। करि तरवार दुधार ॥ छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

छं० चोटक ॥ तरवार जुधार दुधार धरैं। सिर मार अपार विचार परैं ॥
निरवार किवार दुकार दिए। घर द्वार उघारि सुसार किए ॥ ६० ॥
सर मार डंडार सिरार सरैं। धर बारि मझार सुवारि परैं ॥
तरवारि करार अँगार झरैं। परिमार अपार सुभार डरैं ॥ ६१ ॥
छडवारि कचार किचार करैं। तर सारक वारि कन्हार करैं ॥
कर तारि दै नारद नृत्य करैं। विकरारनि चौसठि पत्त भरैं ॥ ६२ ॥
किलकारति भैरव भूत करैं। हलकारत षेतरपाल षरैं ॥
॥ छं० ॥ ६३ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ अंत कलप जनु मचि कलह। भिरे महिष मय हद्द ॥
चालुक अरि चहुआंन स्रत। काल कलह कित युद्ध ॥ छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ ३७

छंद विराज ॥ जुगजुद्ध जुरैं। मन को न मुरैं ॥
धक धींग धकैं। बक बैन बकैं ॥
घट घाव घने। बजि जोग बने ॥
तरवारि कसी। घन विज्ज लसी ॥
नर मुंड नचैं। सिव माल सचैं ॥
रिन षेत रच्यौ। रँग रत्त मच्यौ ॥
धरती धरकैं। घन घाव रकैं ॥
पग हथ्थ परैं। कवि ओप करैं ॥
मधु माध समैं। मधु जानि भमैं ॥
सब देव अगै। पलकैं न लगैं ॥
किलकार करैं। षिलवार परैं ॥
जुगिनी हुलरैं। रुधि पत्र भरैं ॥ छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

३६ पाठान्तर-परवारि। धरैं। दये। किये। झरार। परैं। झरैं। कपारि। झंन्हार। करै। विक्रालनि। करै। परैं ॥

३७ पाठान्तर-मंहिष। ज्वारी ॥

३८ पाठान्तर-जुरैं। कोंन। बैंन। घनैं। वजि। बनैं। नचैं। सचैं। रंग। धरकैं घावरकैं हथ। परैं। उप। करैं। जाति ॥

दूहा॥ पच भरें जुग्गिनि रुधिर। ग्रिध्धिय मंस डकारि॥
नच्चौ ईस उमया सहित। रुंड माल गल धारि॥ छं०॥ ६६॥ रू०॥ ३९॥

छंद पद्धरी॥ दरबार ताल रुधि भरित वारि। इक हथ्थ रत्त चढ़ी किनारि॥
तिन मध्धि मग्न तह जिम मजंन। धर धारि मारि जे धुकन संत॥
॥ छं०॥ ६७॥ रू०॥ ४०॥

दूहा॥ * षेल मच्चौ दरबार मझि। मत्त गवार बसंत॥
सिर श्रुक बिनु घावह करै। सुभट सुभ्रंगध कंत॥
॥ छं०॥ ६८॥ रू०॥ ४१॥

छंद लघुनाराच॥ धुकंत धार धार सीं। बकंत मार मार सीं॥
भुकंत भार भार सीं। तकंत तार तार सीं॥ ६९॥
डकंत भूत डाक सीं। बसंत बीर बाक सीं॥
परंत हीन पाःहै। भरंत हथ्थ घाःहै॥ ७०॥
जरंत मंन मंत सैं। घुरंत घाइ घंत सैं॥
सुषग्ग अंगुली षिरैं। फलो सुकीर बिघ्घुरैं॥ ७१॥
नचंत घाइ नारदं। टटे सुघाइ टारदं॥
भभक्कि रुद्दि भभ्भसे। बबक्कि रद्द बद्द से॥ ७२॥
हबक्कि हाक हक्कए। चवक्कि कुंभ चक्कए॥
मोरित मुच्छ मुच्छए। चढ़ी सु आनि चच्छए॥ ७३॥
चलंत हाथ चंचलं। परंत बांन पंचलं॥
भिदंत भांन मंडलं। भयौ सु नह कुंडलं॥ ७४॥
बहंत मोष बहए। कराकि लग्गि छहए॥
कटंत सीस कहए। रिनंक षत्त फहए॥ ७५॥
फटंत फंफ फेफरं। गटंत पेषि केफरं॥
बजंत घाव घुंमरे। मनौं परेव घुंमरे॥ ७६॥

---

३९ पाठान्तर–गिधय। विधिय॥

४० पाठान्तर–हथ। रत। चढ़ी। मधि। ते॥

४१ पाठान्तर–मत। गवांर। बनु। घावहं॥

* यह रूपक सं· १६४० की पुस्तक में नहीं है॥

कुटैं सिरं करारयं। कपास ज्यौं पिंजारयं ॥
फुटंत यौं सुषेपरी। कि जोग पत्त टोपरी ॥ ७७ ॥
कटंत जंघ कुंभए। मनौं सुरंभ भिंभए ॥
* परीय संझ सामयं। चलुक्क रष्षि नामयं ॥ छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

सांझ हो गई परन्तु लड़ाई न रुकी।

कवित्त ॥ परिय संझ जग संझ। टरिय कंकन रंकन धन ॥
भरिय पत्त जुगिनीय। करिय सिव माल सीस घन ॥
मुरिय न भिरत चालुक। धरिय रसरोस कन्ह हिय ॥
पैरि चलिय दरबार। सीह गज घट्टि उ ट्टिय ॥
मय मत्त मार मत्तौ उररि। भररि भररि भग्गिय अनिय ॥
है घरिय लोह बुज्झौ लहरि। षेल कस्यौ किगवीरनिय ॥
॥ छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ कन्ह जाइ संमुह परत। कला एक मचि रारि ॥
सत सारध दूनौ कटै। भजै अवर तजि ढार ॥ छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ४४ ॥

कान्ह चौहान का युद्ध जीतना।

करषा ॥ झरै (* सार) सिर मार विकरार रत्तन झरत ॥
परत धरनीय ढरैं जरकि जूपी ॥
चक्क चहुवांन चालुक्क रुत उदर चर।
कोपियं कन्ह मनौं काल रूपी ॥ छं० ॥ ८१ ॥
रुंड भक्करुंड किय तुंड मुंडन हरत।
बाहि सिर सार मनौं मेह वुट्ठे ॥

४२ पाठान्तर-धकंत। सां। डकंत। हूं। हथ। घाय। षिरं। षरें। बिस्तरै। घाय। भभकि। रुधि। भट्ट। भट्ट। बबकि। रद। बद। हर्वाकि। हकए। चवक्कि। चकए। मोरित्त। मोरिर। मुंछ। मुक। मुछए। आंनि। चक्कए। नट। रिंनंकि। षत। मनों। कुटें। शिरं। ज्यों। यों। मनों। * यह पाढ सं- १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

४३ पाठान्तर-शिव। चालुक। पैट। चलीय। घट। उपटिय। भाठीय ॥

४४ पाठान्तर-जाय। सम्मुह। दूनौं। कटे। भजि ॥

४५ पाठान्तर-* अधिक पाठ है। धरनि। मनौ। जम। दारि। नृघात। † यह रूपक सं- १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

कूह करि जूह संमूह को कोक हर।
रोस रिम राह जेम जीव कुहैं ॥ छं० ॥ ८२ ॥
पांनि करि पांनि चरि पांनि करनीय हक।
सीस अरी पारि सब षेत सीच्यौ ॥
श्रात सोमेस नृपघात मंजन भरन।
षेत षयकार षय काल पीज्यौ ॥ छं० ॥ ८३ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

स्लोक ॥ हनिनं विनायकं सेना, कथितं न च पूर्दयम्।
अयुद्धं चकतं एषां, विना स्वामि रणे युधम् ॥ छं० ॥ ८४ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

प्रतापसिंह आदि के मारे जाने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का अप्रसन्न होना ॥

दूहा ॥ नीउ विसासन अप्प भर, गह्यौ कन्ह चहुआंन।
गए मेच्छ लै सकल मिलि, प्रथीराज अकुलान ॥ छं० ॥ ८५ ॥ रू० ॥ ४७ ॥
पारि भिन्न चालुक्क भर, मध्य अजमेर प्रमान।
सात भ्रात भीमह हने, रन जीत्यौ भर कांन ॥ छं० ॥ ८६ ॥ *रू० ॥ ४८ ॥

पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कन्ह चौहान का घर बैठ रहना, तीन दिन तक अजमेर में हरताल पड़ना ॥

बत्त सुनी तब कान्ह नैं, षिज्यौ कुंअर प्रथिराज।
बैठि रहे तब निज सुघर, औदरबार समाज ॥ छं० ॥ ८७ ॥ † रू० ॥ ४९ ॥
तीन दिवस अजमेर में। परी हट्ट हटनार ॥
हूह कोह बज्यौ विषम। लग्यौ सु भूत भूत भुआर ॥ छं० ॥ ८८ ॥ रू० ॥ ५० ॥
मधि बजार चलि रुधिर नदि। रुरत तुंड घन मुंड ॥
बरकि कन्ह चहुआंन करि। तिल तिल सम तन तुंड ॥
॥ छं० ॥ ८९ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

---

४६ पाठान्तर—हननं। यं। अयुद्धं। स्वामी। रिने। जुधं ॥
४७ पाठान्तर—अप। चहुआंन। अकुलांन ॥
४८ पाठान्तर—मध्य। प्रमान। * यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥
४९ पाठान्तर—बत। खिजय। कुंअर। प्रथीराज। रहे। † यह रूपक कोलफील्ड वाली पुस्तक में नहीं है ॥
५० पाठान्तर—हट। हटनार। भुआर ॥ ५१ पाठान्तर—चहुवांन। तिन ॥

सात दिन तक कन्ह के न आने पर पृथ्वीराज का उनके घर मनाने के। जाना और कहना कि संसार में यह बुराई हुई कि घर बुलाकर चालुक्यों के। मार डाला ॥

कवित्त ॥ सात दिवस जब गए । कन्ह दरबार न आए ॥
तब प्रथिराज कुँआर । अप्प मनए ग्रह जाए ॥
तुम ऐसी क्यौं करी । अप्प सिर चढिय सुकाई ॥
कहिहैं सब चहुआन । हने चालुक्क सुराई ॥
आपनि विषें अप्पन सुघर । सो रावर ऐसी करिय ॥
इह दोस अप्प लग्गयौ खरौ । बत्त वित्तरिय जग बुरिय ॥
॥ छं ॥ ९० ॥ रू० ॥ ५२ ॥

कन्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा में बैठकर मोछ पर ताव रख सकता है ॥

दूहा ॥ कही कन्ह चहुआन तब । मो बैठें कोइ आनि ॥
सभा मझि संभरि अवर । मुच्छ धरै क्यौं पानि ॥ छं० ॥ ९१ ॥ रू० ॥ ५३ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि तो आप आंख में पट्टी बांधे रहा कीजिए ॥

करी अरज प्रथिराज बर । जो मानो इक कन्ह ॥
सभा बुराई जौ मिटै । चष बँध पट्ट रतंन ॥ छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज का जड़ाऊ पट्टी बनवाकर अपने हाथ से कन्ह के आंख में बांध देना ।

तब प्रथिराज विचार करि । चष आच्छौ हो पट्ट ॥
बहुरि कोइ भर भोरही । धंरत परै इक झट्ट ॥ छं० ॥ ९३ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

---

५२ पाठान्तर-कुंग्रार । अप । शिर । काइय । कहिहैं । चालुक । राइय । विषै । करीय । लग्यो । बिस्तरिय ॥

५३ पाठान्तर-कोई । आंनि । मधि । संभरी । मुंछ । पांनि ॥

५४ पाठान्तर-प्रथीराज । जैां । मांनों । जों । बधि । * संवत १६४० की प्रति में यह नहीं है ॥

५५ पाठान्तर-प्रथीराज । पट । बट ॥

मनी बत्त सुसत्य मन। सै जराव को पट्ट ॥
राजन कन्ह चष बंधही। मनीं सिरी जग घट्ट॥ छं०॥ ९४॥ रू०॥ ५६॥

कवित्त ॥ पाव लष्ष परिमान। मोल किंमति ठहराइय ॥
तौल टंक इकईस। नयन आकार सवारिय ॥।
जरिय जवाहर मद्धि। अरक उद्योत प्रकासिय॥
दिष्टि मंडि देषंत। दुज्जन उर अंदर त्रासिय॥
कंचन किलाव लगाय कल। पट्टी बंधिय चंद भट॥
तिहि वेर कन्ह चहुआन चष। रूप प्रगटि अति षिचि वट॥
छं० ॥ ९५ ॥ रू० ॥ ५७ ॥ †

दूहा ॥ पाटी बंधिय कन्ह चष। इह ओपम कवि अष्षि ॥
तन सुंदर जलु बीर रस। ओटा बंधि सुरष्षि॥ छं०॥ ९६॥ रू०॥ ५८॥ †

पट्टी रात दिन बंधी रहती थी ॥

दूहा ॥ सो पट्टी निस दिन रहै। छोरि देइ है टाम ॥
कै सिज्या वामा रमत। कै जुट्टत संग्राम॥ छं०॥ ९७॥ रू०॥ ५९॥
करि सुचित्त चित कन्ह कों। प्रथीराज रस भाइ ॥
अवर सूर सामंत सब। रहै दीथ सुख पाइ॥ छं०॥ ९८॥ रू०॥ ६०॥
एक बाज ऐराक बर। हंस नाम अवनीस ॥
साजि साजि राजन रजक। कन्ह कीन बगसीस॥ छं०॥ ९९॥ रू०॥ ६१॥
जम दढ इक्क जराव जरि। एक उंच सिर पाव ॥
नर (सु*) नाहर वर कन्हं कों। कीनैं कुँअर पसाव ॥
छं० ॥ १०० ॥ रू० ॥ ६२ ॥

५६ पाठान्तर-मानी। सति। पट। राज हय चष कन्ह बंधि। मनुं। सरी। घट॥
५७ पाठान्तर-परिमांन। ठहराईय। तोल। मधि।
५८ पाठान्तर-अषि। रषि॥ †ये दोनो रूपक संवत १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं॥
५९ पाठान्तर-निशि। सेज्या। संग्रांम॥
६० पाठान्तर-चित्त। भाय। चाय। पाय॥
६१ पाठान्तर-ए। नांम॥
६२ पाठान्तर-शिरपाव। * अधिक पाठ है॥ कों। कीनी। कुंअर।

कन्ह चौहान की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ भारथ्थ भीम वर ॥
इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ द्रोनाचारज वर ॥
इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ दससीस बीसभुज ॥
इसौ कन्ह चहुआन । जिसौ अवतार वारि सुज ॥
जुध बेर इस्स तुट्टे जुरिन । सिंघ तुट्टि लषि सिंघनिय ॥
प्रथिराज कुँअर साधाय कज । दुरजोधन अवतार लिय ॥
छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ जहँ जहँ राजन काज हुअ । तहँ तहँ होइ समथ्थ ॥
मेर दब्ब बथ्थह भरै । नर नारां नर नथ्थ ॥ छं० ॥ १०२ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का समाचार सुन कर बहुत दुखी होना ॥

गाथा ॥ फुट्टिय बत्त प्रदासं । अनिलं बसिजेम परिमलयं ॥
सुनियं चालुक भीमं । सारँग सुत हंति चहुआनं ॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

जलियं चालुक नाथं । अग्गि विलग्गिय उअर मझ्झायं ॥
मुक्किय न्टप मीसासं । मंनिय दुष भ्रात अप्पायं ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई मांगना ॥

दूहा ॥ अति दुख मन्यौ भीम हिय । लिखि कग्गद चहुआन ॥
सत्त भ्रात मेरे हते । इच्छै वैर अप्पान ॥ छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

६३ पाठान्तर-इसौं । चहुवान । जिसो । भारथ । द्रोणाचारिज । एम । इम । सिंहलीय । प्रथीराज । दुर्जोधन ॥
६४ पाठान्तर-जहां २ । तहां २ । होय । समथ । दब । बथह । भरैं । नृथ ॥
६५ पाठान्तर-बत । सुनीयं ? सारंग । चहुवांनं ॥
६६ पाठान्तर-लग्गि । मनीय ॥
६७ पाठान्तर-कग्गर । चहुवांन । सात । अप्पांन ॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार हैं जब चाहे आओ ॥

सुनिय राज चहुआन वर। दिय कग्गद फिरि तेह ॥
जब तुम मंगौ बैर वर। तब हम बैर सुदेह ॥ छं० ॥ १०६ ॥ रू० ॥ ६८ ॥

भीम का चढ़ाई के लिये तय्यार होना पर सरदारों के कहने से वर्षा ऋतु भर ठहर जाना ॥

कवित्त ॥ बँचि कग्गद चालुक्क। रोस लग्यौ अयान कह ॥
करो सेन सब एक। चलो अजमेर देस रह ॥
तब कह्यौ बीर परधान। मास पावस्स रहैं घर ॥
करि कातिक घन कटक। हनै चहुआन सोम बर ॥
सुनि राज अप्प मन्यौं सुहिय। अत्तह सब जन अवर नर ॥
उपसर्ग्ग रोस चालुक्क नृप। षिन षिन वित्तिय जेम थिर ॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

उपसंहार का कथन ॥

दूहा ॥ रहै राज अजमेर महि। संभरेस चहुआन ॥
निसि दिन यौं क्रीला करै। ज्यौं अवतार सुकान्ह ॥
छं० ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ७० ॥

इति श्री कवि चन्द विरचिते प्रथिराजरासके कन्हांषपट्ट बन्धनं नाम पञ्चम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५ ॥

६८ पाठान्तर–कग्गर। मगौ ॥

६९ पाठान्तर–बंचि। कग्गर। लग्गौ। अयासकह। अयासकहि। रहि। प्रधांन। मांस। पावस। कातिक। मन्यौ। उपसंग्गि। वित्तीय ॥

७० पाठान्तर–चहुआंन। यों। ज्यों ॥

अथ आषेटक वीर बरदान वर्णन समय लिख्यते ॥

(छठां समय)

पृथ्वीराज के कुँअरपने के तपतेज का वर्णन ।

कवित्त ॥ कुँअरप्पन प्रथिराज । दर्ष विय सपत समर तन ॥
समुह तेज असहेज । हरन तम गेर समर गन ॥
उर किवार भुज वज्र । अंग वज्रंग षलन लुअ ॥
भुज भुजंग वर जोर । जोर ब्रंनह सत्तुन भुअ ॥
अनभंग अंग जनु अंगदह । पवन पाइ आषेट मंहि ॥
सँग डोरि स्वान जीवन लषै । सबन अग्ग अपंजह तिवहि ॥
छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ बर्षन सोभा नैन । मैन जनु मुदित सरित सर ॥
हरष हास मुष कंति । बिकसि जनु कमल सूर बर ॥
मधुर सबद गुंजार । जानि गंभीर हरिय सद ॥
गयन गरुअ गज भंति । चलत कुल चालि वेद बद ॥
चहुआन सूर सोमेस सुअ । धुअ जनु भुअ अवतार लिय ॥
मन हरनि हरत मन पिष्षि कै । जनु विधिना अप हथ्थ किय ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

छंद पद्धरी ॥ रहै सुभट थट्ट प्रथिराज संग । जै पैज गंग सुअ कप्पि पंग ॥
षट रस विलास अंनन अपार । भुक्तंत भोग भट सुभट सार ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

१ पाठान्तर—सं० १६४७ की पुस्तक में इस का ऐसा पाठ है:—"कुअरपन पृथीराज । वर्ष विय बीस समर वरय । समुह तेज अस हेज । जोर ब्रंनह सत्तुन भय । भुज भुजंग वर जोर । हरन तरोर समरगन । उर किवार भुज वज्र । अंग वज्रंग षलन मन" ॥ बाकी दोनों तुक जैसे के तैसे हैं ॥

२ पाठान्तर—शोभा । नैंन । मैंन । उद्दित । सरनि । कांति । विकसित । जांनि । कुलि । चहुआंन । सुय । मंन । पिषिकैं । हथ ॥

सुरनाथ संग सुर सकल सोभ। बंसह छतीस चहुआन ओप॥
नव कुलन मध्य नव नाग जानि। तिम जूथ मद्धि गज राज बानि॥ छं०॥ ४॥
उडगनन मद्धि गुरदेव कंति। बरनी न जाइ सुत सोम भंति॥
छह पंच मद्धि ज्यौं हनुअ लंक। तिम पिथ्थ कथ्थ षलु परत बंक॥ छं०॥ ५॥
नव ग्रहन मद्धि जनु सूर तोष। षग भ्रंम क्रंम संम्भर अदोष॥
क्रीडंत अंग रंगह हुलास। विभ्रमा पुच जनुं अलक वास॥ छं०॥ ६॥
कर तानि बान कंमानि धारि। अनभूल घात नंषै उतारि॥
अदभूत बान विद्या अमंग। बचै दाव घाव दज्जंम अंग॥ छं०॥ ७॥
पाइक्क अंक षेलत किनेक। गहि चिन सुहंत कुहंत एक॥
आषेटनि पुन लषि जीव घात। गज सिंघ रिंछ कुपि कोल पात॥ छं०॥ ८॥
है लषै सक्क करि भेद छेद। दिष्षंत नयन सालोत्र षेद॥
गज चिगछ इच्छ जानंत सब्ब। नाटिक निवास सम सेस कब्ब॥ छं०॥ ९॥
सम सिल्प सास्त्र वसु क्रंम क्रंम। सब वेद रीत रोपंन भ्रंम॥
यौं तपै पिथ्थ अजमेर मांहि। सोमेस सूर चहुआन छांहि॥
छं०॥ १०॥ रू०॥ ३॥

पृथ्वीराज की दिनचर्या का वर्णन।

कवित्त॥ प्रथम जामि निसि रज्ज। कज्ज द्वैगै दिष्षत लगि॥
दुतिय जाम संगीत। उक्कव रस कित्ति काव्य जगि॥
चितिय जाम भोजन्न। समय चव जाम बिलंसिय॥
सुष्ष सुलष उर अप्प। वारि अप्पी उर वंसिय॥
घरियार रढिय बंदीं पढ़िय। आनि सूर सोमेस जस॥
उठि ब्रह्म मुहूरत राज बर। हय पष्षरिय सिकार रस॥
छं०॥ ११॥ रू०॥ ४॥

३ पाठान्तर-प्रथीराज। कपि। अनन। ज्यों वंश। छतीश। चहुआंन। उप। मधि। जांनि। मधि। प्रथीराज। बांनि। मधि। गुरदेव। जाय। मधि। ज्यों। पिथ। कथ। मधि। समेर। विलास। बांन। अनभूल। बांन। पायक। अंग। चन। सिंह। रींछ। यह। हय। सक। दिषंत। चिगिछ। इछ। शिल्प। शासन। यों। पिथ। छाह॥

४ पाठान्तर-जांमि। निसरज। काज। दिषत। जांम। त्रतीय। जांनि। भोजन। समष। जांम। बिलसीय। अप। अप्पिय। वंसीय। बंदिन। ब्रहम। महूरत। पषरीय॥

पृथ्वीराज का आखेट के लिये निकलना ।

कवित्त ॥ कर पद मत्त धनुष्य । ढाल आनन सुचक्क रथ ॥
पटह हींस घन स । बिपुल बद्धीय समग पथ ॥
इक बंधियै इक बधिय । एक भंमिय सम भोर ॥
इक्क सु मृग विफुरीय । इक्क चिकरीय दीन सुर ॥
कवि चंद सोर चिहुँ ओर घन । दिघ्घ सद्द दिग अंत भौ ॥
संकिय सयल जिम रंक । इम अरन्य आतंक भौ ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ ५ ॥

अकेले कवि चंद का बन में भूल जाना ।

कवित्त ॥ जंगल धर सुकुमार । करत आषेट सपत्तौ ॥
संग सूर सामंत । गहन गिरि षोह सुरत्तौ ॥
एक सहस सँग स्वान । एक सत चीते संगह ॥
उभै सत्त सँग हिरन । करत मन पवन सुभंगह ॥
सम विषम विहर वन सघन घन । तहां रुध्य जित तित्त हुअ ॥
भूल्ल्यौ सुसंग कवियन वनह । और नहीं जन संग दुअ ॥
छं० ॥ १३ ॥ रू० ६ ॥

एक आम के पेड़ के नीचे एक ऋषि से उसकी भेंट होना ।

दूहा ॥ विपन विहर ऊपल्ल अकल्ल । सकल्ल जीव जड जाल ॥
परसंपर बेली बिटप । अवलंबि तरल तमाल ॥ छं० ॥ १४ ॥
सघन छांह रवि करन षष । पग तर पसु भजि जान ॥
सरित सोह सम पवन धुनि । सुनत श्रवन झहनात ॥ छं० ॥ १५ ॥
गिरि तट इक सरिता सजल । झिरन झिरन चिहुँ पास ॥
सुतरु छांह फल्ल अमिय सम । बेली विसद विलास ॥ छं० ॥ १६ ॥

---

५ पाठान्तर-घत्त । धनुंक । धनुकं । धनुष । आंनन । चक । चय । सद्द । बद्दिय । इक । म्रग । बिफुरिय । चिहु । उर । छिघ । अंस । सकल । सयल ॥

६ पाठान्तर-करन । आषेटक । संपतो । हद्द । षोहर । संग । साथ । तित्त । भूल्यो । कबियन ॥

तहां सु अंबतर रिष्य इक । कस तन अंग सरंग ।

दव दड्ढो जनु द्रुम्म कोइ । कै कोइ भूत भुअंग ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

गाहा ॥ जप माला ग्रग छाला । गोटा बिभूतं जोग पट्टायं ॥

कुबिजा खप्पर हथ्थं । रिड्ढं सिद्धाय बचनयं मुझं ॥

छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ ८ ॥ *

कविचन्द का ऋषि के पास जाकर पूछना कि आप कौन हैं ?

दूहा ॥ चंद पिष्षि चरच्यौ सुमन । इह कोइ रूप अलेष ।

पग परसैं दरसैं दरस । उत्तिम भूत अरेष ॥ छं० ॥ १९ ॥

करि बंदन कविचंद कहि । को तुम आदि अनादि ।

तुम दरसन बिन दिन गए । ते सब बीते बादि ॥ छं० ॥ २० ॥

तुं † धाता करतार तुं । भरता हरता देव ।

तुं दत्ता गोरष तुंही । प्रसन होउ प्रभु मेव ॥ छं० ॥ २१ रू० ॥ ९ ॥

ऋषि का पूछना कि तुम कौन हो इस बोहड़ बन में कैसे आए ।

दूहा ॥ कहै जंगम तुं कौन नर । क्यों आगम ह्यां कीन ।

जीव जंत घन विघन बन । जीव जीव बल छीन ॥

छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ १० ॥

चन्द का अपना परिचय देना ।

गाहा ॥ दरसन देव मुनिंदं । चंदं बिरहं च दुष्षदं दायं ॥

अब मुझ कम्म सुफल्लियं । दिष्षे सुफल रूप तपसीयं ॥ छं० ॥ २३ ॥

देवान वरं सिद्धाण दरं । गुर नरिंद सनमानं ॥

गय भुम्मि दब्ब नट्ठा । पां मिज्जे पुण्य रेहायं ॥ छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ ११ ॥

---

७ पाठान्तर—ऊपरल । परसपर । अबनंत्रि ॥ १४ ॥ झहनांत । झहनाट ॥ १५ ॥ गिर । झरत । झरन ॥ १६ ॥ अंनर । तरु । उही । अंग न रंग । द्रुम ॥ १७ ॥

८ पाठान्तर—बिभूत । पटायं । मझं । मंझं ॥

* यह रूपक सं० १६४७ वाली पुस्तक में नहीं है ।

९ पाठान्तर—पिषि । को । परसों । दरसों ॥ १९ ॥ तूं । भर्ता । तूं । दता । तुहीं । होहि ॥ २१ ॥ † यह संस्कृत त्वम् का पहिला हिन्दी रूप है ।

१० पाठान्तर—जती । तूं । कौन ॥

११ पाठान्तर—गाथा । दसनं । चंदं न बिरह ददेह दंदायं । चंदम । दंदाई । कर्म । दिषे । सफल ॥ २३ ॥ सिद्धान । दसनं । भूम्मि । भूमि । पा । मिजे । पुन्य । रेहा इं ॥ २४ ॥

दूहा ॥ भट्ट जाति कवियन न्रपति, नाथ नाम सो चंद।
आलस में गंगा बही, अब्ब गए सब दंद ॥ छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ १२ ॥

जती का प्रसन्न होकर एक मंत्र बतलाना जिसके वश में बावन बीर हैं।

कवित्त ॥ प्रसन चंद सम जतिय। दिन्न इक मंच इष्ट जिय ॥
इह आराधंत भट्ट। प्रगट पंचास बीर बिय ॥
करि साधन इह साध। व्याधि नासत फल धारिय ॥
गुरु उपदेसह पाइ। सकल आंधीन अकारिय ॥
धरि कान मंच लीनौ कविय। परसि पाइ अग्गैं चलिय ॥
करबे सुपरिष्या मंच की। रचि आसन अग्गैं बलिय ॥
छं ॥ २६ ॥ रू० ॥ १३ ॥

चन्द का मंत्र की परीक्षा करना और बीरों का प्रगंट होना।

दूहा ॥ भली बुरी न्निमित कछू, मेटि न सक्कै कोइ।
याही सों भवतव्यता, कहत सयाने लोइ ॥ छं० ॥ २७ ॥
पसु आषेटक करन कौं, संग न्रपति बरदाइ।
औसे में इह भावई, अकसमात हुअ आइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
मंच परिष्या करन कौं, बन मभ्झ बैठौ चंद।
रचि रचना सुचि स्नान करि, धूप दीप पढ़ि छंद ॥ छं० ॥ २९ ॥
रचि आसन्न गनेस तँह, सिद्धि बुद्धि लछि लाभ।
फुनि मंचह भैरव जपत, डक्कु गरज्जिय आभ ॥ छं० ॥ ३० ॥
गैंन गह्वर गंभीर धुनि, सुनि ससंक भय गात।
आनन अग गअ गंज हुअ, जानि उलक्का पात ॥ छं० ॥ ३१ ॥
सुष दाता माता पिता, सेवक सरन सधार।
उपवन बैठे चंद जहँ, है पंचास पधार ॥ छं० ॥ ३२ ॥
मंच जंच धारंत मन, आकरषे जब चंद।
प्रगट दरस दीने सबन, कबि उर बढ्यौ अनंद ॥ छं० ॥ ३३ ॥

१२ पाठान्तर-न्रपति। नांम। आल समैं। आल समय। अब ॥
१३ पाठान्तर-दीन। भट। प्रंचास। ए। नासन। धारीय। अकारीय। पाय। अग्गें। अग्गै। करनें। करनैं। परष्या। अग्गें ॥

महा पुरिष पिष्षै जवै, तब हुअ हरष सरीर।
दंडव्रत अंजुलि करिय, मन आनंद रुधीर ॥ छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

बीरों के रूप आदि का वर्णन ॥

छंद पद्धरी ॥ आनंद चंद दरसंत इंद। सोभा सुभंत वज्रंग दंद ॥
तन तेज तरनि ज्यौं घनह ओप। प्रगटी कि किरनि धरि अगिन कोप ॥३५॥
चंदन सुलेप कसतूर चित्र। नभ कमल प्रगटि जनु किरन मित्र ॥
जनु अगनित नग छवि तन विसाल। रसना कि बैठि जनु भमर व्याल ॥३६॥
मृग मद मयूष जनु पिऊष पान। प्रभु मुदित मगन नासा रसान ॥
मर्द्दन कपूर छवि अंग हंति। सिर रची जानि विभूत पंति ॥ ३७ ॥
कज्जल सुरेष रचि नेन धंति। सुत उरग कमल जनु कोर पंति ॥
चंद्रंन सुचित्र रुचि भाल रेष। रजगुन प्रकासतें अरुन भेष ॥ ३८ ॥
रोचन लिलाट सुभ मुदित मोद। रवि बैठि अरुन जनु आनि गोद ॥
घूंघर घमंकि पाइन विसाल। न्त्रत्तंत जननि जनु अग्ग बाल ॥ ३९ ॥
धूसरस भूर बनि बार सीस। छबि बनी मुकट जनु जटा ईस ॥
बनि विसदकंठ इक बेलि माल। आभाति उडग्गन निसापाल ॥ ४० ॥
चंपकनि पुहप बनि कंठ कंति। रस रमत भ्रमर जनु पीत पंति ॥
न्त्रत्तंत एक संगीत भंति। नारद्द रिझ्झ कर धरत तंति ॥ ४१ ॥
इक परत बथ्थ इक करत हथ्थ। गज तरुनि केलि जनु सरित सथ्थ ॥
इक प्रगट होत इक दुरै जात। परसंत परस्पर सुमन दात ॥ ४२ ॥
छिन एक होत गिर गरुअ देह। गरजंत एक जनु घटा मेह ॥
इक उघटि सब्द संगीत तान। इक पढत भाष नागह विसाल ॥ ४३ ॥
इक ब्रह्म पोष सम करत घोष। पौरान प्रगट इक वचत मोष ॥
दाढाग्र इक्क चर्षंत फुनिंद। इक धरत ध्यान जानिक मुनिंद ॥ ४४ ॥
इक गरनि मुंड मुष रुंड एक। कुंजर सहार गिर तरन तेक ॥
इक मुष्प अग्गि ज्वाला उठंत। इक परह देह बरिषा उठंत ॥ ४५ ॥

---

१४ पाठान्तर–निमित। भवितव्यता। सयानें ॥ ९७ ॥ कों। न्रपति। ऐसें। आय ॥ २८ ॥ परिष्या। कों। बैठो। स्नांन। परि। चंद ॥ २९ ॥ गनईस। तहां। बुधि। उक। गरजिय ॥ ३० ॥ गगन। आंनन। अंगं। गज्र गंज। भो। जानिक। उलका ॥ ३१ ॥ जहां। तहां हूं ॥ ३२ ॥ धारता। आकर्षे। बढयो ॥ ३३ ॥ पुरुष। पिषे। जवें। हर्षे। शरीर ॥ ३४ ॥

इक करत गाज चिक्कार एक। इक रुदत मुदत गिरि उठत केक ॥
इक करत रूप गिरि सिषर कोइ। इक रूप बहुत इक एक दोइ ॥ ४६ ॥
धमकंत धरनि इक लात घात। इक स्वास उडत उपवनह पात॥
पिथ्थीय चरित ए दंद भट्ट। हर्षित हुलास मन में अघट्ट ॥ ४७ ॥
रोमंच अंग उभ्भार देह। भैभीति भंनि तहाँ दिष्षि एह ॥ छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ जिन देवन दरसंत। देव दानव हिय संकहि ॥
किंनर जष गंध्रब्ब। सर्व सनमुष जिन कंपहि ॥
सिध साधक जिन दरसि। तरसि संकत हिय विभ्रम ॥
महाबीर बलवंत। कवन सहि सकै तिनं क्रम ॥
अदभुत चरित दंदह चरहि। सुर विचित्त हिय हथ्थ किय ॥
आराधि मंच मन ताप सह। साव धान सम्भारि जिय ॥ छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ फुनि सुदिष्ट दूरी करन, अकल भयानक भीर।
बिना मंच को बसि करै, महाकाय बे बीर ॥ छं० ॥ ५० ॥
अनरिति फल काहू करन, किहिकर अनरित फूल।
दिव्य वस्त्र काहू करन, नाना बरन अमूल ॥ छं० ॥ ५१ ॥
सत्त मंत को दिष्षियत, रज मय के दीसंत।
तामस के पिष्षे प्रबल, क्रोध कलह किरतंत ॥ छं० ॥ ५२ ॥
को इक कुंजर मद वहत, कोइक सिंघ सरूप।
को इक पन्नग विष गरल, को इक दिष्षित भूप ॥ छं० ॥ ५३ ॥
ब्रह्मरूप को इक वदत, को इक तापस भेष।
जूप रूप तसकर सुके, छिन में भेष अलेष ॥ छं० ॥ ५४ ॥
अगिनज्वाल किन तन उटत, किन तन बरसै मेह।
चक्र पवन डंडूर के, केतन कंकर षेह ॥ छं० ॥ ५५ ॥

१५ पाठान्तर—ज्यां। उप। अग्न ॥ ३५ ॥ अग्निन। भ्रमर ॥ ३६ ॥ म्रिगमद। पियूष। पानि। अंगहुंति। विभूति ॥ ३७ ॥ नैंन। प्रकाश ॥ ३८ ॥ आंनि। घुघर। घमकि। पायन। रसाल। नृत्यंत। अग ॥ ३९ ॥ वेलि। आभाकि। उडगन। निशापाल ॥ ४० ॥ नृत्यंत। नारद। रींभ ॥ ४१ ॥ हथ। तरुन। स्वथ्थ। दुरे ॥ ४२ ॥ शब्द ॥ ४३ ॥ ब्रह्म पोष। पारान। एक। ध्यांन जांनि के। जान कि। मुष। अग्नि। बुठंत ॥ चिकार। उठंत ॥ ४६ ॥ धमकंति। स्वांस। पिषिय। पिष्षिय। चरित्र। भट। मैं। अघट्टि। ॥ ४७ ॥ उभार। भय। तहां। दिषि ॥ ४८ ॥

१६ पाठान्तर—जष्य। गंधर्व। सिद्ध। महाबीर। अदभुत। चरितं। हथ। सावधांन ॥

सुमन दृष्टि केइक करत, के फल अन्न रसंस।

रुधिर मंस तन चमकते, आप परस्पर संस ॥ छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ १७ ॥

चन्द का बीरों को देख कर प्रसन्न होना ॥

दूहा ॥ दिष्षि चंद आनंद मन, धनि मझ गुर उपदेंस।

मद्दा पुरुष पिष्षे प्रसन, सो मन मिटि अंदेस॥ छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ १८ ॥

चन्द का बीरों की पूजा करना ॥

कवित्त ॥ सनमुष अंजुलि जाइ, करी दंडौत सबन कहुँ ॥

कुसुमंजलि सिर मंडि। धूप नैंद्द समुह सहुं ॥

आरति सबनि उतारि। नयन नैनह सब मिल्लिय ॥

रहे पिष्षि सब बीर। जांनि पंनग वच षिल्लिय ॥

फिंनी सुभ गति भव भावना। चित चंचल सुथ्थिर करिय ॥

भय चंद चंद तन मन प्रसन। अस अभूत पुज्जिय रलिय॥ छं०॥ ५८॥ रू०॥ १९॥

चन्द का पृथ्वीराज के लिये शत्रुशमन मंत्र ग्रहन करना ॥

कवित्त ॥ जिन बीरन बसि करन। जोग जोगी षट मंडहि ॥

जिन बीरन बसि करन। दुंद आराधत तंडहि ॥

जिन बीरन बसि करन। चरन सत गुर अभ्यासहि ॥

जिन बीरन बसि करन। प्रेत भूतन विसबासहि ॥

सो बीर पंच हुअ सहज में। जती एक परसाद किय ॥

प्रथिराज भाग बरदाइ बर। सत्रु समन इह मंच दिय ॥

छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ २० ॥

क्षेत्रपालों (बीरों) का पूछना कि हम लोगों को क्यों बुलाया है ॥

१७ पाठान्तर–करया। भयांनक। बे ॥ ५० ॥ काहूं कदरा। बर्णो ॥ ५१ ॥ सत। मत। दिषियत। मैं। पिषे। क्रत्यंतं ॥ ५२ ॥ पंनग। दिषित ॥ ५३ ॥ कोई। भेस। अभेस ॥ ५४ ॥ बरसं। मंडूर ॥ ५५ ॥ केइ। करतह। रसस। मंसं। आपस पद परसंस ॥ ५६ ॥

१८ पाठान्तर–दिषि। पिषे। प्रसंन। अंदेश ॥

१९ पाठान्तर–जाई। दंडोत। कहैं। कहुं। नैवद। सहैं। सहुं। सबन। नैंन। नैंनन। मिलिय। पिषि। जांनि। षिलिय। किनी। भवना। सुथिर। प्रसंन। पूजित ॥

२० पाठान्तर–षधंम आतम भ्रम मंडहि। वाशिकरन। विसवासहि। सोइ। पृथ्वीराज। शत्रु ॥

दूहा ॥ षेत्रपाल तब चंद सौं । किन्न हुकम सुदेव ॥
जंच मंच आराध हुत । क्यौं आकर्षे मेव ॥ छं० ॥ ६० ॥ रू० ॥ २१ ॥

चन्द का यह उत्तर देना कि हमने पृथ्वीराज की सहायता के लिये आप लोगों को बुलाया है ॥

साटक ॥ आकर्षेत्र त्व देव मेव सवयं, पिथ्यं चितं कारनं ।
विषमं बंक सहाय आय भट, भटं भया भैकरं ॥
इच्छेयं मन पेमयं च वरयं, दंदं दलं दारुनं ।
श्रीवीराधि सुरिंद चंद नमयं, चर्नस्य सर्नागतं ॥ छं० ॥ ६१ ॥ रू० ॥ २२ ॥

चन्द का प्रार्थना करना कि जैसे आप राम रावण आदि की लड़ाई में रक्षा करते आए ऐसे ही पृथ्वीराज को भी करना ॥

कवित्त ॥ महनि मथि जब सुरनि । जुद्ध असुरां सुरं जब्बहं ॥
अमरन अमिय अमीय । मोहि असुरन तब तब्बह ॥
काली सुर मचिषास । तिपुर जित्तिय मचिषासुर ॥
जालंधर भसमास । राम दसकंध अभंगुर ॥
जहँ जहँ सुदेव बंकम परिय । करिय अभय तुम देव तब ।
देवाधि देव दानव दहन । चरन सरन हम रष्षि अब ॥
छं० ॥ ६२ ॥ रू० ॥ २३ ॥

बीरों का प्रसन्न होकर कहना कि जब गाढ़ पड़ै तब स्मरण करना ॥

कवित्त ॥ षिनक मौंन रचि देव । बचन चंदह उच्चारिय ॥
हम प्रसंन तुझ सेव, सुनहु भट्टं सुभ कारिय ॥
समर संग तुअ राज, जब सु संकट षल जानिय ।
तहँ सुमरंत सु चंद, दंद हनिहैं सुन मानिय ॥

---

२१ पाठान्तर-सों हुकंम । सु ॥

२२ पाठान्तर-पिथं । बंक । सुभटं । घटं । इछेयं । सुरेदं । चरनस्य । सरनागतं ॥

२३ पाठान्तर-महन । मचि । असुरांन । जबह । अमिय । अमींय । मोह । तबह । रांम । दसमथ । जहां २ । संकद । रषि ॥

सिर धारि चंद वाचा लइय, हदा प्रसन सेवक रहौ।
करि क्रिपा नाथ भइं सरिस, विवरि नाम बीरन कहौ ॥
छं० ॥ ६३ ॥ रू० ॥ २४ ॥

भैरव का एक बीर को आज्ञा देना कि सब बीरों का नाम बतला कर चन्द को पहिचनवा दो ॥

दूहा ॥ तब भैरव इक गन सरिस, किंन हुकम हर चंद ।
विवरि नाम बीरन सबन, कहि पिछनाबहु चंद ॥
छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ २५ ॥

सब बीरों का नाम गुण कथन ॥

दूहा ॥ वज्रपाट ता नाम गन । घन तन घोर भयंक ॥
प्रथुक नाम बरनत सबन । सुनत मिटै तन संक ॥
छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ २६ ॥

छंद पद्धरी ॥ गुन ईस चरन गुन गहर गाइ । फल सिद्धि बुद्धि जा नाम पाइ ॥
बानिय प्रसंन जो प्रथम होइ । करौं प्रसन बीर पंचास दोइ ॥ ६६ ॥
आइक्क बीर यह प्रथम सेव ॥ तिहि प्रसन प्रसन सब जानि देव ॥
वपुलाइ बीर हंनत विनोद ॥ जिहि प्रसन सदा आनंद मोद ॥ ६७ ॥
बुँढिआइ बीर बन्दौ सनेह ॥ जल मय सुथलनि करि बरसि मेह ॥
आनलप्रहारिय प्रबल बीर ॥ जिहि जुरत दनुज भरहरै भीर ॥ ६८ ॥
नारीय क्रीडनह होड कोइ ॥ ब्रह्मा उपास करै टूक दोइ ॥
सूलीय भंज अनगंज बीर ॥ बज्रह सुभंजि दोइ करै चीर ॥ ६९ ॥
समसान लोटना बीर बंक ॥ तिहि पीर भीत अन संक भंक ॥
गढ उपडनाइ तो बीर नाम ॥ क्रोधंत कूट नह लहै ठाम ॥ ७० ॥
सामुद्र तिरन इह बीर चाव ॥ सप्तम समुद्र मनु बहत बाव ॥
सामुद्र सोष अनभंग बीर ॥ दनु देव समुद्रन हरत नीर ॥ ७१ ॥

२४ पाठान्तर—सीस । वचन । उचारिय । उचारीय । प्रसन । हुव । हुआ । भटं । कारीय । जानीय । तहां । दंद हमें सनमानीय । सनमानिय । सदां । प्रसंन । कारं । भट्टह । बिचारि । नांम । कहीं ॥

२५ पाठान्तर—दोहरा । नांम ॥

२६ पाठान्तर—नांम । पृथक । प्रथुक । बरनन । मिटे ॥

इह लोह भंजनिय वीर दीस ॥ सारन पहार भंजै सरीस ॥
संकना चोट इह नाम धारि ॥ भंजै जँजीर जनु सूत नार ॥ ७२ ॥
विस षाय राय सो वीर जांनि । पचवंत जहर जनु दुध पानि ॥
रूँडमाल नाम लोइ है देष । पिष्षिय भयंक इक कालभेष ॥ ७३ ॥
अगिया वीर कुप्यंत वार । प्रब्बतप्रजारि सो करत छार ॥
बिषषिया वीर बीराधि बीर । तिहि क्रोध दनुज संहरै भीर ॥ ७४ ॥
जमघंड नाम औघट्ट जोर । जिन सहज गाज घन घोर सोर ॥
कालाइ नाम इह बीर लेषि । सब तजै भीर भै भीत देषि ॥ ७५ ॥
कुरलाइ नाम इह कलन जाइ । सुर असुर नाग तातकै पाइ ॥
अगिक्रान्त बीर जब होत कोह । तब जरत तेज गिरसिषर षोह ॥७६॥
विषकंत बीर अत्यंत बंक । जिन पिष्षि कंक अन संक्र संक ॥
रगतिया बीर पग रत्त रंग । अरि रक्त बाह सो करत भंग ॥ ७७ ॥
कोइलाइ नाम जो सेव पाइ । तिन कष्ट होत भग्गै सदाइ ॥
कालक नाम करौ बीर सेव । तिहि प्रसन काम दुग्धं कि देव ॥ ७८ ॥
कालवेलाइ नाम बिन बीर कैान । गम अगम थान जनु वहत पैान ॥
काल घटाइ बज्जंग वान । कोपंत दनुज दल हरन पान ॥ ७९ ॥
इंद्र बीराइ बल इंद्र जोर । चौगुन विलास तन हरत रोर ॥
जम वीराइ बीर क्रत्यन्त कोह । सत्तउ समुद जल करत गेह ॥ ८० ॥
देवग्नि नाम करौं सेव पाइ । सुभ धर्म कर्म दाता सदाइ ॥
उँकार वीर नमि करौं ध्यान । जिहि प्रसन सदा आनन्द ग्यान ॥ ८१ ॥

२७ पाठान्तर–गाय । नांम । पाय । बानी । प्रसन । होय । करो । दोय ॥ ६६ ॥ आइक । तिहिं । लाय । जिहिं ॥ ६७ ॥ बुंदि । स एह । थलन । अनल । प्रहारीय । जिहिं ॥ ६८ ॥ क्रोड-नह । करें । दोय । अनभंग । दो ॥ ६९ ॥ श्मशांन । तिहि संक्र वंक अनभीत वीर । नाय नांम । हल-हलै ठांम ॥ ७० ॥ सामंद । जनु । वहतु । बायु । साममुद्र । शोषा सोषै समुद्द सब पिवै नीर ॥ ७१ ॥ और । जंजीर ॥ ७२ ॥ विसषापरा । पांनि । मांनि । रुंडमाल । पिषिय । मय ॥ ७३ ॥ अगिया । कोपंत । पर्व्वत । प्रजार । करै । विपषियाइ । तिहिं ॥ ७४ ॥ यमघंट घाट । औघट । ओघट । कालाय । वीर । लेष । तजैं । देष ॥ ७५ ॥ कुरलाय । नांम । तिहिं । जाई । पाय । क्रोध । षोध । तब जरत सिषरं गिर तेज षोध ॥ ७६ ॥ वीर । बंक । पिषि । वाह ॥ ७७ ॥ कोयला । नांम । भग्गै । कालकाइ । कालका । नांम । करो । तिहिं ॥ ७८ ॥ ब्रिंन । किन । कोंन । बहि ।

झापटा बीर जब जुरत जुद्ध। नहिं सहत जोर दनुदेव सुद्ध॥
मांनिक्क भद्र है बेर मान। ठेलन अठिल्ल गढ द्रुग्ग पान॥ ८२॥
कपडिया बीर कहा करौं किति। मन वित्त राग जै मुक्ति जित्ति॥
केदार राइ नव जुद्ध आप। दिष्षन्त नैन जिन जात पाप॥ ८३॥
नरसिंघ बीर नरसिंघ रूप। चौगुन विलास आलम अनूप॥
गोरिया बीर गुन सकल जानि। नव रसन रास बाना विनान॥ ८४॥
घट घंट बीर जनमे सुजान। सोषत समुद्द अरि समुद पानि॥
कंटेभ्य बीर सुनि समर बाज दनु दलन कटक में परै गाज॥ ८५॥
बग नाम बीर जब समर कच्छ। बग लेत ढुंढ जनु नीर मच्छ॥
माहव्वगाव व्व्यंग अंग। अद्भूत अंग रूपह सुरङ्ग॥ ८६॥
संतो साइ सत मनह सुधीर। पर मथ्थ अथ्थ भव नाव कीर॥
महा संतोष सत संग धार। सेवक समुद्र भव नाव पार॥ ८७॥
भ्रमराइकाई बल बाय देय। भ्रम परे समर षल परैं लेय॥
महाभ्रमराइ काइक अजीत। भ्रम होइ ताहि जाकूर चीत॥ ८८॥
सहसाष अष्षि कर सहस जान। जानु द्रुपद मध्य रहै गच्छ दान॥
सह स्रांग अंग नित रूप विच। भय भीत अभय भै करन मिच॥ ८९॥
षेच पाल षिति षल करै प्याल। नाना चरिच गोपाल बाल॥
भूतषनइ बीर बलवन्त क्रूर। तटकन्त षिभ्भि तन करत चूर॥ ९०॥
साकिनीमार अद्भूत जोर। समरन्त भक्त तन हरत रोर॥
बेढरी रीति भञ्जन बलाइ। कलपंत करन जे तक तपाइ॥ ९१॥
साकि बाहनह ससि सूर रूप। सेवक निवाजि बर करत भूप॥
ए नाम बीर सुनि चंद लेइ। पहिचांनि प्रसन करि विदा देइ॥
छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ २७ ॥

समीर। वांन। दनुनि। पांनि। पांन॥ ७९॥ बीर। त्रिगुन। झभंत। जल हरन॥ ८०॥ नांम। कहूं। करीं। पाय। सहाय। करी ? ध्यांन। जिहिं। ग्यांन। ग्यांनं॥ ८१॥ झापरा। युद्ध। नह। माणिक भद्र। मांन। पांनि॥ ८२॥ कापडिया। कहां। करीं। वीत। जिति। केदाहराय। दिषंत। नैंन॥ ८३॥ त्रिगुन। गोरिला। जांन। जांनि। विनांन॥ ८४॥ घटाघंटे। दुजान। में। सु जांन। समुंद। यांनि। कुनटेभ्य। सनि। मैं। परं॥ ८५॥ वग। नांम कछि। कछ। लैत। ढुंढि। मछ। माहवगात्र॥ ८६॥ सत्त। मत्तह। परमथ। अथ। नामकीर। बीर सत्यंग॥ ८७॥ भ्रमराय काय। परें। परै। महाभ्रमराय। कायक। होत्त॥ ८८॥ सहसाष्य अषि। जांनि द्रुपद। रछि। दांन। सहश्रांग॥ ८९॥ षित्रपाल। प्याल। पाल। भूतषानाय। भूतषनाइ। षिभ्भि॥ ९०॥ साकिमीमार। बलाय। पाय॥ ९१॥ सालिवाहन। नांम। लेई पहिचान॥ ९२॥

चंद का बावनो वीर को पहिचान कर प्रणाम करके विदा करना और आप पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे बढ़ना ।

कवित्त ॥ पहिचानिय कविचंद । बीर बावंन सूर दर ॥
महाकाय मद्दमंत्त । अंत जनु अचित दनुज क्रर ॥
तेज साजि चष भाजि । तास धीरज्ज धीर धर ॥
भीत भयंक भयांन । जानि ग्रीषंम अगनि झर ॥
करि नवनि चंद पहिचान सब । वज्रपात अभया कहिय ॥
बहुराइ देव कवियन प्रबल । मिलन पिथ्थ आगैं चलिय ॥छं०॥९३॥ रू० ॥ २८॥

चन्द का उस जङ्गल का वर्णन करना जहां पृथ्वीराज आखेट खेलता है ॥

कवित्त ॥ अग्ग गयौ गिरि निकट । विकट उद्यान भयंकर ॥
जँह न षबरि दिसि विदिसि । बहुत जहँ जीव षयंकर ॥
सिंह कोल गज रीछ । बहुत सामर बलवंते ॥
चीतल चीत हिरंन । पाइ षरकैं भजि जन्ते ॥
सेही सियाल लंगूर बहु । कुड कदंम भरि तर रहिय ॥
पिष्षे सु जीव कवि चंद नें । तुच्छ नाम चौपद कहिय ॥
छं० ॥ ९४ ॥ रू० ॥ २९ ॥

कवित्त ॥ ठाम ठाम जल थान । मद्धि जल जीव निवासिय ॥
ढेंक कुरंम कुरंच । हंस सारस सुभ भासिय ॥
बगले बतक बिहंग । मगर मछ कछ द्रह पूरिय ॥
देवि दनुज पंनग निवास । सिद्ध साधक रुचि रूरिय ॥
पर परषि बरन घन पिष्षियै । रोम हर्ष देषत नरन ॥
तुक बुद्धि भट्ट देषत भुल्यौ । कवि सुभन्नि कहै का बरन ॥
छं० ॥ ९५ ॥ रू० ॥ ३० ॥

२८ पाठान्तर-पहिचांनिय । मदमंत । चष भाषि । धीरज । जानि । ग्रीषम अगनिर । पहिचांनि । बहुदाय । पिथ । अग्गें ॥
२९ पाठान्तर-अग्र । जहां । जह । बहुत । जहां । सीह । रीछ । सांमर । सांवर । चित्रक । हिरन । पाय । षरकै । लंगुर । पिषे । तुछ । नांम । चोपद ॥
३० पाठान्तर-ठांम २ । थांन मधि । निवासीय कवह द्रह । पूरीय । पिषियै । बुधि भट ॥

कवित्त ॥ सघन वृष्य घन छांह । जानि बद्दल नभ वासिय ॥
देषत पथ्थ गिरंत । वेलि अवलम्बि विलासिय ॥
मोर सोर कोकिलन । (रोर) * चीह पप्पीह पुकारत ॥
सुमन सुगन्ध सम्बह । अंध मधुकर मधु आरत ॥
बहु कुही बाज सिंचान बच । लंगूर लाग लेयर्न फिरैं ॥
देषन्त जनावर भष्य ही । जनु अकास तारा गिरैं ॥
छं० ॥ ९६ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ तहँ षेलत पृथिराज । संग सामंत जङ्ग जुरि ॥
षट सुडोरि सँग स्वान । लेत ते जीव सबन जुरि ॥
बगुर घेरि विप्पंन । अप्प म्रूलन में मंडिय ॥
तक्क तके दूक रचिय । चक्कि षेदा पिष्ष छंडिय ॥
भहराइ भग्गिं पसु उठि चले । आवै आवै होइ रचि ॥
परस्पर सोर वे करत सुनि । यों सिकार चन्दह सुलचि ॥
छं० ॥ ९७ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ तिलक भाल ससि षण्ड । गण्ड मद भमर बिलुद्धिय ॥
सुरभि तेल सिंदूर । सुमन संपति मन सुद्धिय ॥
सुद्ध दुद्ध जिम दसन । विरुद बानी जिस ब्रिंमल ॥
फरस मुसल असि चर्म । हथ्थ पंचम मोदक कल ॥
पुज्जिय सुचंद सुर इंदजग । गवरिनंद दूषन दुरय ॥
कंपहि सिकार गज तुंड डर । सब विघंन गनपति हरय ॥
छं० ॥ ९८ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

३१ पाठान्तर-वृष्य । जांनि । बदल पथ्य । पथ । * अधिक पाठ है । पपीह । सीचान । लंगुरू । फिरें । देषत । जिनावर । भषक ही भष्यक हैां । जनुं । आकास गिरें ॥

३२ पाठान्तर-तहां । सुं डोरि । संग । स्वांन । बंगुर । घेरीय । वियन । पडिय । हक्कि । भयराय । भगि । हुइ । रहिय । लहिय ॥

३३ पाठान्तर- गंड चम्मर मदलुद्दिय । सुम्भि । संपंति । दुद्द । द्दुध सुद्ध । बांनी । त्रिमल । चम्मं । हय । पुजिय ॥

कवित्त ॥ दुजपति अंकह हिरन । इक्कनिमय सुभाय अति ।
गजनंनह टारन्न । विघन विय दिठ्ठ गनप्पति ॥
षट आनन वर मोर । त्रतिय उप्पीय निसंक उर ॥
भगवति वाहन्न सिंघ । बेदग जीय सुमेर थरि ॥
बरदाइ चंद मुषच्चारि षग । पंचम बह सुषह रहहि ॥
आतंक अवर आरन्य पसु । उर थरहरि कंपत रहहि ॥

छं० ॥ ९९ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

कवित्त ॥ हहरि हिरन हारियव । हेरि कातर रव रहिय ॥
अप्प चाप भय मोह । विरह लग्गी चटपहिय ॥
हिय धरक्क धुधरह । वदन लोइन जल निभ्भर ॥
नक्रित चकित संकीन । समग संकरिय दुष्षभर ॥
भैरत्त चमक्कत पत्त रव । षिनक्र चित्त जिम उप्परै ॥
षिल्लत सिकार पिथ कुँअर डर । पसु पींपग द्रत्र थरहरै ॥

छं० ॥ १०० ॥ रू० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ पोमिन बन नहिं चरहि । नहिन संचरिहि कुमुद बन ॥
ईष षेत परहरहि । जीर परहु अविरत्त मन ॥
मंथर गति लखि मुंथ । कास कानन नह चष्षाह ॥
नह पिष्षै नियनारि । नहिन चष कंदनि रष्षहि ॥
गिरि मद्धि गहिर गुझ्झह बसहि । नीर समीप न संचरहि ॥
सोमेस सुनन आषेट उर । इमड ढाल उस सह चसहि ॥

छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ गिर कंदर सर वरह । सरित कच्छह घन गुच्छह ॥
निझ्झर कूल न द्रहन । बैंतनल तिन सर पुंजह ॥

३४ पाठान्तर–इक सुभय निसंक अति । गजवदन तह । गजनंतह । दिठिय । गनपत्ति । त्रतीय । उपीय । निसंक । गज्जीय । गजिय । थिर । रहिय । आतंक । आरंन्य । रहिय ॥

३५ पाठान्तर-हहकि । हीरन । हारीयव । रच । अय । लग्गिय । धरक । धुंधर । निझर । संकित । समग्ग । संकरीय । दुष । भयपत्र । चमकत । पच । उपरें । षिलत । कुंअर । पिंयद्द ॥

३६ पाठान्तर–नहि । चरहिं । कृप । परहरत । परभय । मथर । मुथ । चषहि । पिषैं नाहि । रषहि । मधि । गुज्झह । इमुद । सहि ॥

जजर अरि पुर घरह । सैल तट उड्डन अड्डह ॥
हथ्थ जोरि सब सुभ्भि । उभ्भ दिष्षहि कित लड्डह ॥
फल फूल दृष्य भु अकास थल । बन उपवन घन संचरहि ॥
ढुंढत डढाल डढाल चिय भुक्कारन बहु भुक्करहि ॥
छं० ॥ १०२ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥ नहिं गब्बत करि गब्ब । नहिन गज्जत घन गज्जत ॥
षोलत नहिय नयंन । सिंघ कहि बोलत लज्जंत ॥
भुअन मद्धि संचरत । नहिन कुंचरत दुरद बन ॥
चरन लेष लुप्पतसु । पुंछ गज मुत्तिय मग गन ॥
धक धकहि धुकहि तकहि चकहि । दिग्घ उसासन उल्हसहि ॥
प्रथिराज कुंवर कोबंड डर । गिर कंदर केसर बसहि ॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥ बग्गुर अगिनत परत । कितिक फंदन पगविद्धत ॥
कितेक फूलन मरत । कितिक स्वानन मह सिद्धत ॥
घंटनरागन कितक । कितक चीते तकि दब्बत ॥
बाज सिंचान कुहीन । झपटि चंचनु फल चब्बत ॥
घन कूच सिकारन ह्वै रही । भजि न जीव कहुं जै सकै ॥
बलवतं बाघ हथ्थिय अजर । पकरि हंकि लीजै धकै ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ गाडी लिए कितेक । कितक उंटन पर डारे ।
पत राषे धर कितक । कितक हथ्थी पर धारे ॥
काहर कंधन कितक । कितक स्वानन मुष टुट्टत ॥
बिंछी सर्प विषंग । मंच वादी मिल लुट्टत ॥

---

३७ पाठान्तर-गिरि । कछह । गुछह । निझर । कुलन । कूलह । सेल । अधह । हथ । सुभि । उभ । दिषहि । दष । भू । भुपुकारनिबहुसुकरहि ॥

३८ पाठान्तर-नहिं । गबनु गब । गजत । नैंन । लाजत । भुअअन । रेष । लुंपतसु । पुछ । मगग मुति । हिंवकहि । दिघ । उल्हसै । पृथीराज । कुंअर । झेहरि । बसै ॥

३९ पाठान्तर-बगुरि । कितेक । स्वांनन । दबत । चंचंनु । पल । चूब्बत । चूबत । कहु । कहुं । अथिय । हथीय । हथिय । हकि ॥

वज्जत निसान सद्दनाइ सुर। नवल डक्क वज्जत वज्जिय॥
सिक्कार षेलि घन रस रह्यौ। सब पहार पग बलद्दलिय॥
छं०॥ १०५॥ रू०॥ ४०॥

कन्ह चौहान आदि सब सरदारों का आकर पृथ्वीराज से मिलना और कहना कि आज यहीं शिकार हो॥

कवित्त॥ आइ कन्ह चंहुआन। नवंनि प्रथिराजतु किन्निय॥
आइ राइ गोयंद। प्रथुक आदर आदन्निय॥
आंइ चंद पुंडीर। धीर सघ्यह हँसि मिल्लिय॥
बलिभद्रह कूरंभ। कहर किन्ने रस षिल्लिय॥
अनुआ राइ पावार मिलि। बरुन बंध सिर कर धरिय॥
मिली कही सिंह पाहार इह। आज केलि अदभुत करिय॥
छं०॥ १०६॥ रू०॥ ४१॥

दूहा॥ मिल्लिय सकल सामंत तहँ, गनि न कहै प्रथु नाम॥
हयन हींस परबत गजिय, सघन सुविद्रुम भाम॥ छं०॥ १०७॥ रू०॥ ४२॥

पृथ्वीराज का शिकार से घर की ओर लौटना॥

छंद पद्धरी॥ फिर चले कुंअर प्रथिराज गेह। मिलि सकल सूर सामंत नेह॥
परहास परसपर करत केलि। तारीन तक्कि न्रप लेत झेलि॥ १०८॥
अंगाइ नीर कर मुष पषारि। सब करन मंडि कपूर धारि॥

गोठ (भोजन) के स्थान पर ठहरना॥

जहां हुई गोठि भोजन नरिंद। तहां हुते सकल सामंत हंद॥ १०९॥

चन्द बरदाई का आकर पृथ्वीराज से मिलना और पिछला सब वृत्तान्त एकान्त में ले जाकर कहना॥

फुनि मिले चंद बरदाइ आइ। कछु कही बात पिछली सुनाइ॥
न्रप भट्ट जाइ बैठे इकंत। फिरि कही बत्त जो आदि अंत॥ ११०॥

४० पाठान्तर-लीए। कितक। कितेक। पति। हथी। स्वांनन। सर्प्प। बजत। निसांन। सहनाय। डक। बजत। सिकार॥
४१ पाठान्तर-आय। चहुआंन। पृथ्वीराज। किनियः। आय। राय। गोइंद। पृथुक। आय। सथह। हसि। मिलिय। षिलिय। कहिय॥
४२ पाठान्तर-तहां। नाम॥

पृथ्वीराज का भोजन करना और फिर आगे बढ़ना ॥

सुष मद्धि सुष्ष प्रथिराज पाइ । भोजन करंन न्रप बैठे आइ ॥
छह रस निवास आहारि अंन । करि कुरल षांन करपूर लिंन ॥१११॥
म्रगमद जवाद सब चरचि अंग । कसमीर अगर सुर रचिय संग ॥
सुभ कुसुमहार सब कंठ मेलि । इम चलिय बलिय.चहुआन षेलि ॥११२॥
छह आगा इक्क सौ तुरिय तेज । उड्डंत पंषि बिन पंषिरेज ॥
बगसीस सकल सामंत जोग । दिषि वाह वाह सब कहत लोग ॥११३॥
सुष चाल फाल जे हिरन लेत । उत्तंग गात पष्षर समेत ॥
गज घालि बांह घूघर सलोल । लष्षें न राह करते कलोल ॥११४॥
हा कहत उडन हां कहत ठठ्ठ । गिर परत धक्क जिन कोट गठ्ठ ॥
प्रित मात असलि ऐराक देस ।

सब सरदारों के एक एक घोड़ा बांट दिया उसी पर सब चढ़ कर चले ।

सोभंत बानि रवि रथ्य भेस ॥ ११५ ॥
है एक एक सब बंटि दीन ।
चढ़ि सूर सकल सामतं लीन* ॥

कविचन्द के एक हाथी देना जो महा बलवान था ।

दिय हस्ति एक कबि चंद बोलि ।
अंदून ताहि के सकै षोलि ॥ ११६ ॥
तल बहत पाट सुभ्भै न अंषि ।
अति पाइ काइ गहि लेइ पंषि ॥
अनि गज्ज मुष्ष के सकै झेलि ।
खल दलन मभ्भ पारत्त भेलि ॥ ११७ ॥
सुर नाथ वाह सम अंग ओप ।
दिष्षियै खिज्यौ जनु काल कोप ॥
बिन रोस सहज में अजा जांनि ।
हर कोइ बंचिजै चल्यौ कानि ॥ ११८ ॥

*यह तुक एसियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में नहीं है ॥

सक्कै न बोलि को चय अहढ । करहरौ प्रग्ग बलि कवन म्रढ ॥
अगि जल्ल मझ्झ मानै न संक । होइ रहै भूत सुनि बज्जि डंक ॥ ११९ ॥
सुनि विरद कांन चल्लंत मग्ग । तिहि चंद हथ्थ दिय कनक बग्ग ॥

छं० ॥ १२० ॥ रू० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ बाग धरी कवि चंद सिर, हरष भयौ बहु अंग ।
तूं विक्रम अक्रम हरन, करन दरिद्रह भंग ॥

छं० ॥ १२१ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

एक एक सामंत हय, कीनिय चंद हजूर ।
बढि चल्लिय हल्लिय अगैं, सरित तुरंगन पूर ॥

छं० ॥ १२२ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की स्तुति करना ॥

कवित्त ॥ करिय नवनि कविचंद । छंद अनेक पढ़ि करं ॥
तूं सुरपति सम कुंअर । देव सामंत समो वर ॥
अग्गिन कन्ह जल चंद । पवन गोइंद प्रबल बल ॥
धरा चंद बल धीर । तेज चामंड जलन पल ॥
रवि तेज कछर कूरंभ सब । चंद अम्रत आबू धनी ॥
द्रगपाल सबल सामंत सब । रहै दब्बि धरती धनी ॥

छं० ॥ १२३ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

४३ पाठान्तर-फिरि । पृथीराज । येह ॥ १०८ ॥ मंगाय । मंगि । होइ ॥ १०९ ॥ मिलें । वरदाय । आय । कहिय । वत्त । पढ़लि सुनाय । जाय । एकंत ॥ ११० ॥ मध्य । सुष । पृथी राज । पाय । भोजंन । करन फुनि । बैठि । आय । लीन ॥ १११ ॥ जथादि । सुभ कंठहार । मेल्हि । चहुआंन ॥ ११२ ॥ इक । एक सो । उद्दुत पंषि ॥ ११३ ॥ उतंग । पषर । लषे ॥ ११४ ॥ धक । जिहिं । गठ । रथ ॥ ११५ ॥ हय । लिन । आंद्रन ॥ ११६ ॥

तब लहत । सुझै । काय । पाव । लिय । गज । मुहष । मझ । पारंत ॥ ११७ ॥ उंप । दिषियै । मैं । चलो । कांन ॥ ११८ ॥ सकै । कोइ । पग । जल । मझ । मांनै । होय । बजि ॥ ११९ ॥ चालंत । सथ ।

४४ पाठान्तर तु । तूं ॥

४५ पाठान्तर-कीनीय । चलिय । हलिय । अगै । तुंगन ॥

४६ पाठान्तर-पढि । कुमर । कुंअर । समवर । अग्गनि । चावंड । आबू । सकल । रहे । दबि ॥

दूहा ॥ जीभ एक कविचंद कै, किति कही क्यौं जाइ।
जीव बुद्धि पिथ्यह निमित, रह सो मत्ति सुभाइ ॥
छं० ॥ १२४ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

सब लोगों को अपने अपने घर विदा करना ॥

रह्यौ रंग बहुरे ग्रहन, करिय विदा सनमान।
निसा सुष्य मंडै सुषन, जागे ऊगत भान ॥
छं० ॥ १२५ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

वीरों के मिलने के समाचार से पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ॥

प्रथीराज आनंद मन, सुनि बीरन बर वत्त।
फूलत तन तह नीर लभि, द्रुम आतम उलसत्त ॥
छं० ॥ १२६ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

स्नोक ॥ शुभं दिवसे शुभं वार्त्ता। अशुभेच अशुभानि च ॥
शुभाशुभं यथायुक्तं। भवंति दिवसानि च ॥
छं० ॥ १२७ ॥ रू० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ प्रथीराज चहुआन। बान पारथ बलिबंडह ॥
प्रथीराज चहुआन। दंढ दंडैति अदंडह ॥
प्रथीराज चहुआन। सरिस जुध कोउ न मंडै ॥
प्रथीराज चहुआन। सचु चिनु रद गहि छंडै ॥
प्रथीराज चहुआन पहु। कली कारन अवतार कहि ॥
सोमेस सूर पूरई सुभग। उदर पिथ्थ अवतार लहि ॥
छं० ॥ १२८ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

४७ पाठान्तर-जाय। बुधि। पिथह। मति ॥
४८ पाठान्तर-सनमांन। सुष। मंडे। उगत। भांन ॥
४९ पाठान्तर-बत। लहि। द्रम नृप आतम उलसत ॥
५० पाठान्तर-सुभं। सुंभ। वार्त्ता। असुभे। असुभानि। सुभासुभं। यथायुक्तं ॥
५१ पाठान्तर-पृथीराज। चहुआंन। चहुवान। बांन। चंडह। पृथियराज। अडंडह। जुद्ध। त्रिनु। कलि। पिथ ॥

दूसरे दिन सबेरे पृथ्वीराज का उठना और नित्य कृत्य करना ॥

दूहा ॥ प्रात राज जग्गे प्रथम, गो दुज दरसन कीन ।
देहक्रत्ति पुनि छोड़ सुचि, पावन पानि सुलीन ॥
छं० ॥ १२९ ॥ रू० ॥ ५२ ॥

करि पावंन पविंच बर, मोहन सुरभि सुतेल ।
मर्द्दनीक मर्द्दन करै, बढै धात तन बेल ॥
छं० ॥ १३० ॥ रू० ॥ ५३ ॥

नहाकर दस गोदान, दस तोला सोना और बहुत सा अन्न दान देना ॥

करि सनान गंगोदकह, दिय सुगाइ दस दान ।
दस तोला तुलि हेम दिय, अंनदान अमान ॥
छं० ॥ १३१ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

महल में पृथ्वीराज का विराजना और सरदारों का आना ॥

छन्द पद्धरी ॥ करि स्नान दान सुचि रुचि कुंआर । छोड़ देवरूप साष्यात चार ॥
कीनौ सु महल वज्जै निसान । आनन्द सकल सामन्त मान ॥ १३२ ॥
आये सुमहल सामंत सूर । पूरंन तेज वीरत्त पूर ॥
अनभङ्ग अङ्ग अनभूल बान । जिन दिट्ठ अरिय पावै न जान ॥ १३३ ॥
कैमास आइ कीनौ जुहार । विद्या सु चतुर्दस मत्ति सार ॥
गोयन्दराज गहिलौत आइ । बैठो सुकुंअर कमलं नवाइ ॥ १३४ ॥
चहुवान कन्ह आयौ अभङ्ग । भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसङ्ग ॥
अनि अनो सुभर बैठे सुआइ । अनमित्त मत्ति बल अप्रमाइ ॥ १३५ ॥

---

५२ पाठान्तर–गो । देह कंति । पुनः । शुचि । पांन । पांनि ॥
५३ पाठान्तर–पावन । सुरंभ । सुरभ । मर्द्दनीक । मर्द्दन ॥
५४ पाठान्तर–सुस्नांन । गंगोदकहि । दांन । अन । दांन । अप्रमांन ।

राजन कुँआर मधि सूर साज। देवतन मद्धि जनु देवराज॥
गिरिराज मद्धि सब गिरन रज्ज। देखन्त सभा सुभ इन्द्र लज्ज॥
छं०॥ १३६॥ रू०॥ ५५॥

वीरों के वश होने की बात से पृथ्वीराज का पेट फूलता है पर किसी से कह नहीं सकता॥

दूहा॥ बैठि सभा प्रथिराज रचि, आय सुरति निज चित्त॥
वत्त बीर बरदान की, अति उमंग उल्लसित्त॥
छं०॥ १३७॥ रू०॥ ५६॥

रहै न आनँद कुँअर हिय, उगमत कण्ठ प्रमान।
कहै न कासों बत्त बर, मानों दुद्ध उफान॥ छं०॥ १३८॥ रू०॥ ५७॥

कैमास का हाथ जोड़कर पूछना कि आपके मुख पर कुछ उत्साह दिखाई देता है पर आप खुलकर कहते क्यों नहीं?

अरिल्ल॥ पानि जोरि कयमास। बदै तब राज प्रति॥
उर अवलोकित उलसत। सामन्त राज अति॥
को कारन मुष चारु। न कथ्थिय्यहि बत्त सति॥
सुभर सूर सामन्त जु। विनवत्त राज प्रति॥ छं०॥ १४०॥ रू०॥ ५८॥

पृथ्वीराज का चन्द के वीरों को वश करने का समाचार कहना॥

५५ पाठान्तर–ह्वांन। दान। कुआंर। कुआर। होय। बजे। निसांन। मांन॥ १३२॥ पूरन। तेज। वीरत। अभूल। बांन। दिट्ठि। जांन॥ १३३॥ आय। चतुर्ट्टंग। मंति। गोइंद। आय। आई। कुमर। कमल। नवाय॥ १३४॥ वहुवांन। भारथ। कथ। अंनि अंनी। आय। आई। मित। अप्रमाय॥ १३५॥ कुंआर। कुआर। देवतनु। मधि। मधि। रज। शुभ। लज॥ १३६॥

५६ पाठान्तर–पृथीराज। वरद्दांन। अल्हसित्त॥

५७ पाठान्तर–आनंदद। कुअर। कुमर। प्रमांन। मनों। दूध। उफांन॥

५८ पाठान्तर–चन्द्रायना। पांनि। उल्हन्सत। सांमंत॥ १३९॥ चारु। कथि। वत। विनवत॥ १४०॥

दूहा ॥ तब कहै कुंअर सामन्त सम, कलि आषेटक रंग ।
भयो सुर समैं एक मय, आलस ची मैं गंग ॥
छं० ॥ १४१ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ अपरंजे आषेट । चन्द भुल्यौ सुबह वन ॥
जंगम इक तापस्स । मिल्यौ बरदाइ सुद्ध मन ॥
प्रसन भयो कविचन्द । बीर मन्त्रह दीनो बर ॥
अजमायो कविचन्द । बीर बावन टरस चिर ॥
तिन देखि अमित चरितह सुनत । बरनै कवि बरदाइ अति ॥
अनेक रूप अनेक गुन । अनंत गति अनतह सुमति ॥
छं० ॥ १४२ ॥ रू० ॥ ६० ॥

सरदारों का उपहास करके कहना कि भाट, नट, चारन, ये सब आरत हैं इन की बात सत्य नहीं माननी चाहिए ॥

अरिल्ल ॥ प्रसन सूर सामन्त सकल बर । हासे अप्प परसपर सुब्भर ॥
भट नट चारन जू आरत्तह । इनकी गति न मन्नियै सत्तह ॥
छं० ॥ १४३ ॥ रू० ॥ ६० ॥

कैमास ने कहा कि चन्द को देवी ने बरदान दिया है वह सचमुच कोई अवतार है ॥

गाथा ॥ कथ्थिय बर कैमासं । देवी बरदाय चन्द भट्टायं ॥
अस तिन चवै असेसं । सत्यं रूप सत्य अवतारं ॥
छं० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

कन्ह ने कहा कि चन्द छूट गया था यह बात सच है, इसी पर उसने यह बात प्रसंन्न करने के लिये गढ़ी है ।

---

५९ पाठान्तर–कुमर । कुंअर । कालि्ह ।
६० पाठान्तर–अपरजेन भयो । कबिचंद । भुल्यौ । बट । तापस । मिल्ल्यौ । चंद । बरने । बरदाय । अनेक । अनत ॥
६० पाठान्तर–प्रसंन । सुभर । भट्ट । नट्ट । चारंन । जु । आरतह । मनियै ॥
६१ पाठान्तर–कथिय । भटायं ॥

अरिल्ल ॥ कहै कन्ह हम मानी सब्बह । भुल्ल्यौ भट्ट मग्गा बन तब्बह ॥
हसन केलि डर जोरिय बत्तं । इह अचिज्ज मन्नै न विसत्तं ॥
छं० ॥ १४५ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

पृथ्वीराज के मन में सन्देह हो आना ॥

दूहा ॥ किहि मंनी अमनी सुकिहि, त्रिविधि जानि संसार ॥
सुनत राज विभ्रम भयौ, पर्यौ सुचित्त बिचार ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

इतने में चन्द का आकर आसीस देना ॥

इहि विचार करवह मनह, आयौ चंद सुतब्ब ।
दिय असीस कर उंच करि, बेद नीत बर कब्ब ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

पृथ्वीराज का चन्द को पास बुलाकर बीरों की बात छेड़ना ।

राजह सूर हकार लिय, दिय सादर सनमान ।
वीर बिरद बरदाय प्रति, लग्गे बत्त पुछान ॥
छं० ॥ १४७ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का चन्द की बडाई करके कहना कि हम लोगों की बडी अभिलाषा है सो आज वीरों का दर्शन करवाओ ॥

कवित्त ॥ कहै चंद कविराज । बत्त पूरब जो बित्तिय ॥
कहिय कुँअर प्रथिराज । चंद चरची सो सत्तिय ॥
हमहि बहुत अभिलाष । देव वीरानि दरस कज ॥
पावहिं तो परसाद (सूर सामंत मंत अज ॥

६२ पाठान्तर–कहैं । मांनी । भुल्यौ । मग । तवह । जोरीय । शुभ हित इवर गाम सपत्तं । अचिर्ज ॥

६३ पाठान्तर–किहिं । स । किहिं । त्रिधा । जांनि । चित ॥

६४ पाठान्तर–इह । बिचारि । तब । दीय ।

६५ पाठान्तर–राज । हक्कार ।सनमांन । बरद । बरदार । लगे । पूछांन ॥

तो सम न ओर तिहु लोक में । नट भट्ट नाटिक्क नर ॥
संसार पार बोहिथ समद्द । तोहि मात देवी सुबर ॥
छं० ॥ १४८ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

कवि चन्द का मंत्र जपना और होम करना ॥

दूहा ॥ सुनि आनंद्यौ चंद चित । कीन मंत आरंभ ॥
जप्प जाप हवि होम सब । लग्गैा कज्ज असंभ ॥
छं० ॥ १४९ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

वीरों का प्रगट होना ॥

गाथा ॥ किय जप जाप सुहोमं । आए बीर धीर आतुरयं ॥
गज्जै गयन गहीरं । भय भै भीत सोर आघातं ॥
छं० ॥ १५० ॥ रू० ॥ ६८ ॥

छंद भुजंगी ॥ धमंकी धरा धंम धंमै धरक्की । कठं पिट्ठ कंमठ्ठ कट्ठै करक्की ॥
डिग्गै अड्डिगं सो दिग्गंपाल दस्सं । तरक्कै चकै मुंनि जंनं तपस्सं ॥१५१ ॥
भरक्कै सुबाजं सु बाजं बिकुट्टै । तरक्कैक एकं उलट्टै सुलट्टै ॥
इसो आगमं भो सुबावन्न बीरं । कपे काइरं धीर रष्यौ सुधीरं ॥
छं० ॥ १५२ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

वीरों के शब्द से सामंतों का डरकर सोचना कि बिना काम इन को बुलाना ठीक नहीं हुआ ।

दूहा ॥ सुनिअ घात बर बीर कैा, चमकै चित सामन्त ॥
इन आकष कज्ज बिन, किनैां अप्प अमन्त ॥ छं० ॥ १५३ ॥ रू० ॥ ७० ॥

---

६६ पाठान्तर-कहै । कुंअर । प्रथीराज । चचा । चर्चा । सतिय । हर्माहं । वीरनि । वीरांन । कजि । पार्वाह । सामंत । तिहुं । मैं । नट । भट्ठ । नाटिक्र ।

६७ पाठान्तर-आनंदो । मंत्र । जप । सम । लगो । कज ॥

६८ पाठान्तर-गाहा । स । गजे ॥

६९ पाठान्तर-धम्मकी । धम । धमै । धम्मे । धम्मैं । धरकी । कमठ । कठ्ठे । करकी । डिग्गै । डिगे । अडिगं । द्रिगंपाल । दसं । तरक्के । करक्कै । चकै । मुञि । मुनि । जनं । तपसं ॥ १५१ ॥ भरक्के । बिकुटे । तरंक्केक । उलटे । सुलटे । इसो । वीरं । कंपे । कपें कायरं स ॥ १५२ ॥

७० पाठान्तर-सु आघात । चमके । कज । किनैं ॥

दो मत्त हाथी दर्बार के बाहर बांधे थे वह बीरों का भयानक शब्द सुनकर चौंके ॥

दूहा ॥ गज घुमन्त गजराज बर, दो हथ्थी दरबार ॥.
दूरि दूरि बन्धे रहैं। काल समान करार ॥ छं० ॥ १५४ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ अति बलवन्त अनन्त। गरुअ मानहु गिरवर से ॥
गगन जेम गाजन्त। बंध बंधन ते सरसे ॥
च्यार पटे कुहे * कंकालं। मद नहह सुअहो निसि ॥
पवन पाइ पुरवाइ। काल रूपी कँकाल रिस ॥
सिर दिघ्घ दिघ्घ दन्तह सुभग। जरजराइ बंगरि जरिय ॥
लष लष्ष दाम पावहि पटै। कनक साजवाज सु करिय ॥
छं० ॥ १५५ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

दोनो हाथियों का तुड़ाकर लड़जाना और दर्बार में खलभली मचना ॥

दूहा ॥ बीर सोर आघात सुनि, गज कुटि बन्धन तोरि ॥
भिरे उभय भय भीत होइ, परि दरबारह रौरि ॥
छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

छं० मोतीदाम॥ भिरे गजराज भयानक रूप। उभै मदमत्त महा जम जूप ॥
भए कइकाल कराल अरुट। लगै जनु क्रोध सु कज्जल कूट ॥१५७॥
जुरे जुग जानि गुरू गजराज। किधौं कउ दानव रूप दुराज ॥
जगे प्रलकाल भयानक भूत। इसे दुइ दन्ति भिरे अदभूत ॥
छं० ॥ १५८ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

---

७१ पाठान्तर–गुमांन। हाथी। रहै। समांन ॥

७२ पाठान्तर–गरुय। मांनहु। तें। च्यारि। पठ। * अधिक पाठ। मद। हद हद्द। अहर्निसि। पाय। पुरवाय। कंकाल। दिघ दिघ। गरजराइ। बंगरी। लष २। दांम। पावहिं पटे। साजसु ॥

७३ पाठान्तर–कुट्टि। भिरै। भै। दरबारहिं। रोरि ॥

७४ पाठान्तर–भिरैं। भयांनक। मदमत। कोइ। अरुठ। लगै। कजल। कूठ ॥१५७॥ जांनि। गिरराज। कोऊ। दांनव। लगै। जगैं। प्रलै। भिरें ॥ १५८ ॥

सरदारों का बहुत उपाय करना पर हाथियों का बश में न आना ॥

दूहा ॥ दौरि सकल सामन्त मिलि, करे अनन्त उपाइ ॥
रोस लगे छुट्टै नहीं, भई सुहायो चाइ ॥
छं० ॥ १५९ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

चिहूं ओर चरषी छुटै, परै अगड सुमार ॥
गोला लगै गिलोल गुरु, छुटै न तौ इसरार ॥
छं० ॥ १६० ॥ रू० ॥ ७६ ॥

गाथा ॥ बर बावंन सु बीरं । कौनिग लषन्त सूर सामन्तं ॥
करे अनन्त कलापं । नह छुट्टन्त गज गरु आइ ॥
छं० ॥ १६१ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

चन्द का बावन बीरों से प्रर्थना करना कि आप लोग इन हाथियों को छुड़ाकर बांध दीजिए ॥

दूहा ॥ तब कर जोरिय चन्द कबि, अग्गै बांवन बीर ॥
तुम सु छुडावहु मन्त कहु, बहुरि जरहु जञ्जीर ॥
छं० ॥ १६२ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

भैरव की आज्ञा से बीरों का हाथियों को जंजीर में बांध देना ॥

अरिल्ल ॥ तब भैरव भूवाल बीर वर । कीन हुकम कालीय ऊंच कर ॥
छोराबहु गजराज पांनि गहि । बहुरि जरौ जञ्जीर थान कहि ॥
छं० ॥ १६३ ॥ रू० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ तब काली दोरयौ तलपि । गज्ज छुराइ समथ्थ ॥
उभै पांनि सैां रद उभै । गहै उभै वरहथ्थ ॥
छं० ॥ १६४ ॥ रू० ॥ ८० ॥

---

७५ पाठान्तर-दोरि सांमंत । करै । उपाय । लगें । छुटै । नही । स ॥
७६ पाठान्तर-चिहुं । उरं । परे सुगड पर मार । लगें । गुरु । छुट्टै । तो । अस ॥
७७ पाठान्तर-बांवन । सांमंतं । करै । गुरुपाइं । गुरुआईं ॥
७८ पाठान्तर-बावन । बंबंन । स ॥
७९ पाठान्तर-भुवाल । किंन । उच । छोराबौं । पांनि । जरो । थांनि । कहिं ।
८० पाठान्तर-गज । छोराय । समय । पांनि । सें । सं । हथ ॥

यह कौतुक देखकर सरदारों का आश्चर्य में होना और सब का दर्बार में आकर बैठना ॥

गाथा ॥ बंधन दीन सु पाइं । कौतिगं दिष्षयं सब्ब सूरं ॥
मंनिय मन आचिज्जं । वैठे फेरि आइ दिवानं ॥
छं० ॥ १६५ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

पृथ्वीराज का सब बीरों को प्रणाम करना, चन्द का नाम ले लेकर सब बीरों को पहिचनवाना ॥

परसे बीर सु सब्बं । करी प्रथिराज पाइं परिनामं ॥
प्रथक चन्द कथि नामं । पहिचांने बीर बीरायं ॥
छं० ॥ १६६ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि बिना कारण इन को बुलाया है इस से इन की बलि दो पृथ्वीराज का बावन घडा मदिरा बावन बकरे मंगाकर बलि देना और भैरव आदि की पूजा करना।

छंद पद्धरी ॥ पहिचांनि राज प्रथिराज बीर । भयो उदित मन आनंद षीर ॥
कविचंद कहिय प्रथिराज राज। इन देहु सुबल व्याकुल समाज ॥ १६७॥
बिन कज्ज अप्प आराध कीन। नवि विहित कुसल लभ्भो सुईन ॥
बावन घट्ट वारुनि मँगाइ । बावन बीर प्रति घट्ट पाइ ॥ १६८ ॥
बावन अजासुत भष्य आंनि। दीने सु आदि भैरव निदांन ॥
सिंदूर तेल पुह्पनि अरच्चि । सन्तोषि पोषि सब तन चरच्चि ॥
छं० ॥ १६९ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

८१ पाठान्तर–दीय । सु पायं । पाई । सब्ब देषोयं । दिषय सब । मनिय । आचिजं । फिरि । आय । दीवांनं ४ ॥

८२ पाठान्तर–कर । करि । पाय । प्रथुक । करि ॥

८३ पाठान्तर–पहिचानि । प्रथीराज । भयो । श्रीर । कहीय । प्रथीराज । स । बाकुल ॥ १६७ ॥ कज । कुशल। लभैं । बावन । घट । मंगाई । घट । पान ॥ १६८ ॥ भष आंनि । निदांन । आरचि । चरचि ॥ १६९ ॥

वीरों का प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहना कि वर माँगो सो हम दें और अब हमको बिदा करो ॥

दूहा ॥ भये चिपत बीराधिवर, पूरन डक्क डकार ॥
अति आनन्दन उल्हसन, बोले बयन बकार ॥
छं० ॥ १७० ॥ रू० ॥ ८४ ॥

मङ्गि मङ्गि महिपत्ति तुम्र । सोइ समप्पैं आज ॥
दै.सुबिदा न बिलम्ब करि । जु कछु चित्त तुम्र काज ॥
छं० ॥ १७१ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

पृथ्वीराज की ओर से चन्द का कहना कि लड़ाई के समय हमारी सहायता कीजिएगा ॥

गाथा ॥ जंपे वर बरदाई । तुम बरं बीरं देव देवाधिं ॥
भौ प्रथिराज सहाई । जुड्ढं जथ राज जुट्टाइं ॥
छं० ॥ १७२ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

भैरव का चन्द को बुलाकर कहना कि जब तुम्हें टेढ़ा समय आवै तब हम को याद करना ॥

गाथा ॥ तब बर भैरब बीरं । उच्चारीगं संमुष्षं चन्दं ॥
जं तुंम बंकट ठौरं । तं सँभारं विचित अम्हाइं ॥
छं० ॥ १७३ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

गाथा ॥ परतिषि अम्ह सुड्डब्बं । करयं जुद्धं तब्ब साहसं ॥
जथ्यं चरिडन चन्दं । तथ्थं करै न हम आगमं ॥
छं० ॥ १७४ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

---

८४ पाठान्तर-नृपति । डंक । डक । आनंद तन । बैंन ॥

८५ पाठान्तर-महिपति । समयें । दैह । तूं कछु चिंतत काज ॥

८६ पाठान्तर-जपै । वर । बीर । देवधि । वीर देवाधि । जुटाई ॥

८७ पाठान्तर-उचारि" चंद संमुषं । तुंम । बंकठ । ठौरैं । सभारे । संभारे । विचित्त । अम्हाइं ॥

८८ पाठान्तर-अंम्ह । जुद्ध । तबं । साहसं । जथं । तथं । हंमम । आगमं ॥

बचन देकर बीरों का बिदा होना, सरदारों का चन्द की बात पर प्रतीत करना और पृथ्वीराज का चन्द पर अधिक प्रेम बढना ॥

दूहा ॥ दइय वाच सब बीर नैं। बहुराए कबि चन्द ॥
सब सामँत अनन्द भौ। दरसत नट्ठे दुन्द ॥
छं० ॥ १७५ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

सत्य करै मान्यौ सकल। हरषित भय प्रथिराज ॥
प्रेम बढ्यौ अति चन्द सौं। साहस रीत समाज ॥
छं० ॥ १७६ ॥ रू० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज का चन्द से कहना कि सब सरदारों के मन्त्र बतला दे, चन्द का सब के मन्त्र बतलाना ॥

गाथा ॥ तब कूंअर कहि चन्दं। देहुं मन्त्रं सब्बं सामन्तं ॥
तब कहि मन्त्रं चन्दं। कीन अप्प अप्पं सहायं ॥
छं० ॥ १७७ ॥ रू० ॥ ९१ ॥ *

चन्द के बीस गाँव और एक घोड़ा पृथ्वीराज ने दिया ॥

दूहा ॥ बीस गांमं कविचन्द प्रति, करी कुँअर बगसीस ॥
एक बाजि साजति सजहि। दियौ सु सम्भरि ईस ॥
छं० ॥ १७८ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

इति श्रीकविचन्द विरचिते प्रथिराजरासके आषेटक बीरबरदान बर्णनं नाम षष्ठ प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥

८९ पाटान्तर-वीरनें। सामंत। नठै ॥
९० पाठान्तर-सति। करे। मंन्यौ। हरषत। प्रथीराजं। समाजं ॥
९१ पाठान्तर-देहु। मंत्र। सब। अप्प। अप ॥ * यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥
९२ पाठान्तर-ग्रांम। कुअर। कुंअर। सजि°। दीयै ॥

अथ नाहर राय कथा वर्णनं लिख्यते ॥

(सातवां समय)

सोमेश्वर देव का शिवरात्रि का व्रत जागरण करके सोने की तुला दान करना और उसे बांट देना ॥

दूहा ॥ ग्यारह सै गुन तीस बदि, फागुन चद्ददसि सोम ॥
सिवरत्ती सोमेस न्टप, निसा मण्डि जप होम ॥
छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

पञ्च गव्य अस्नान करि, सीस सहस घट मण्डि ॥
दीपदान घृत सहस शिव, कुसुमंजलि सिर कण्डि ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

शिव उपास सोमेस वर, पञ्च उपासि सुराज ॥
महा मोह भक्ती सुगुर, करिय कित्ति कविराज ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

श्लोक ॥ शिवशिवा उपास्य राजन् वीर्य देवन कामयम् ॥
कविचन्द महावाणी, प्रगट रूपेण विस्मितम् ॥
छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ चतुर जाम जग्गिय न्टपति, कनक तुला तहँ कीन ॥
प्रात तमै बर दुजन कहुँ, बंटि अप्प कर दीन ॥
छं० ॥ ५ ॥ रू० ५ ॥

---

१ पाठान्तर–दोहा। सं। सैं। सुनि। चवदिसि। सिवरती। चप ॥ इस रूपक में संवत् ११२९ अनन्द साक वा पृथ्वीराज का तृतीय साक है। इस का वर्णन कवि ने आदि पर्व्व के रूपक ३५५। ३५६, पृष्ठ १३८ में किया है। तदनुसार इस में अन्तर के ९०। ९१ वर्ष जोड़ने से ११२९ + ९०। ९१=१२१९। १२२०। वर्त्तमान विक्रमी होगा ॥

२ पाठान्तर–पचगव्य। अस्नांन १ सहस्र। दान। सहास। कुसुमांजलि। शिर ॥

३ पाठान्तर–शिव। स राज। स गुर ॥

४ पाठान्तर–सिवसिवा। राजं। राज्यं। बीयं। कामयं। वांनी। रूपेन। विस्मितं ॥

५ पाठान्तर–जांम। तहां। समे। कहैं ॥

अन्न अमार अपार उठि, जिहि लीनौ दिय ताहि ॥
छरस भेग भोजन भले, रही न मनसा काहि ॥

छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

उमय ईस अग सोम पुनि, अस्तुति मण्डि समुष्ष ॥
तव चिनेत तन ताप हर, संचन सेवक सुष्ष ॥

छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

शिव जी की स्तुति करना ॥

कवित्त ॥ विदित सरल अति चपल। विमल मति कञ्ज निअच्छिनि ॥
गीत राग रस रटित। सती लंपट विस भच्छिन ॥
भुगति दैन जन विभव। भूर भूक्नि तन सोभित ॥
चिहुर दूहन कविचन्द। केन कारन क्रन लोकित ॥
श्रीविश्वनाथ संमित गवन। गरल चिलोचन रस कुसल ॥
मुष अमल कमल परिमल बहुल। भुगति चारु चर्मेन स्रसल ॥

छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

छन्द पद्धरी ॥ जत गरल कंठ दीसहति बीय। जिम चित प्रगट संसार नीय ॥
सारङ्ग उक्कह तिन पान पानि। दिव तुङ्ग जाल जव जवनि मानि ॥ ९ ॥*
जट मुकुट गंग दीसहि उनङ्ग। सोभल्ल चन्द लिल्लाट रङ्ग ॥
सारङ्ग सूल साढूल चर्म्म। सेवक सहाय अघ हरन कर्म्म ॥ १० ॥
कटि विकट निकट नटवत चिभङ्ग। यनभूत लेय विभ्भूत अङ्ग ॥
बुन्द जा काम जा आप छूल। जैजै सुईस माथा अम्भूल ॥

छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ९ ॥

साटक ॥ कय्याली कपञाल बाहु ग्रहयौ, गिरज्जाइ सारङ्गनौ ॥
बीभच्छौ रस तय्य न्त्रित्य रतयौ, मुब्बीं सदा तुङ्गयौ ॥

६ पाठान्तर–अंमरअव। उट्ठि। जिहिं। नहीं ॥

७ पाठान्तर–मंडिय मुष। मंडीय समुष ॥

८ पाठान्तर–विश्रछन। विश्रछिनि। विषभषिन। किशो। छत। गवन। कुशल। चांरु। चर्म्मेन। भसल ॥

९ पाठान्तर–जुत। दीसहिति। जम। पांनि पांनि। * "दिव तुङ्ग जाल दिव दिव न मांन" संवत १६४७ की पुस्तक में पाठ है ॥ ९ ॥ लिलाट। सादूल। चर्म। कर्म्म। विभूत। अभूल ॥

रुद्रो रुद्दरि पाय नग्गि उरयौ, हास्यं रसं श्रङ्गरं ॥
जामन्तं गिरिजानिनं विरचयौ, कर्नाथ कामं चयं ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १० ॥

साटक ॥ वामं गैारि, स्रँगार हास्य नगनं, कर्नाय कामं चयं ॥
रौद्रं रौद्ररि पाय भार दृमनं, वीरं चिनेचं ज्वलं ॥
भै भीतं दिषि अङ्ग भङ्ग अछितं, वीभच्छ नहव्वतं ॥
सान्तं संमित जोग दीन अदभू, नौ रस्स रस्तं शिवं ॥
छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ ११ ॥

शिवजी की स्तुति करके सोमेश्वर देव का अपने कुमार के विवाह कि लिये नाहर राय के पास दूत भेजना ॥

दूहा ॥ सा देवह करि अस्तुती, बर सोमेस कुमार ॥
नाहरराइ नरिंद कैं, दूत संपते वार ॥
छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १२ ॥

शामदामादि में निपुण दूत का पत्र दरसाना ॥

गाथा ॥ सामं दामं भेवं । वेदं गुनं विग्यं पंमाई ॥
जानं पनं सजीहं । ते पत्तं दूत दरसायं ॥
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १३ ॥*

कवि का सनीचरी दृष्टि के योग पर से भविष्य में बैर दोष होने का कथन करना ॥

साटक ॥ दिष्टी दिष्ट सनीचरी बसछिनो, हंनोपि दुज्जं घरं ।
पावारं परिचार बैर गुरयं, जद्दोंरु चैाचानयं ॥

१० पाठान्तर–कप्पाल । यह्यो । गिरिजाई । गिरंजाई । नो । बीभच्छो । तप । रतयो । मुर्वी । सुंगयो । उरयो । गिरिजां । करुनाय । काम ॥

११ पाठान्तर–शंगार । करुन्हाच । काम । चियं । चिनेत्र । भय । बीभच्छ । नटवर्त्तनं । नटवत्तनं । अदभूत । अदभुत । नो रस॰ । नो रस्स । रसितं ॥

१२ पाठान्तर–अस्तुति । नाहरराय । के । कें । संपत्ते ॥

१३ पाठान्तर–दांनय । गुन । विग्घ ॥ * यह रूपक सं० १६४७ और १८५९ की लिखी पुस्तकों में नहीं है ॥